# राम राज्य का सच

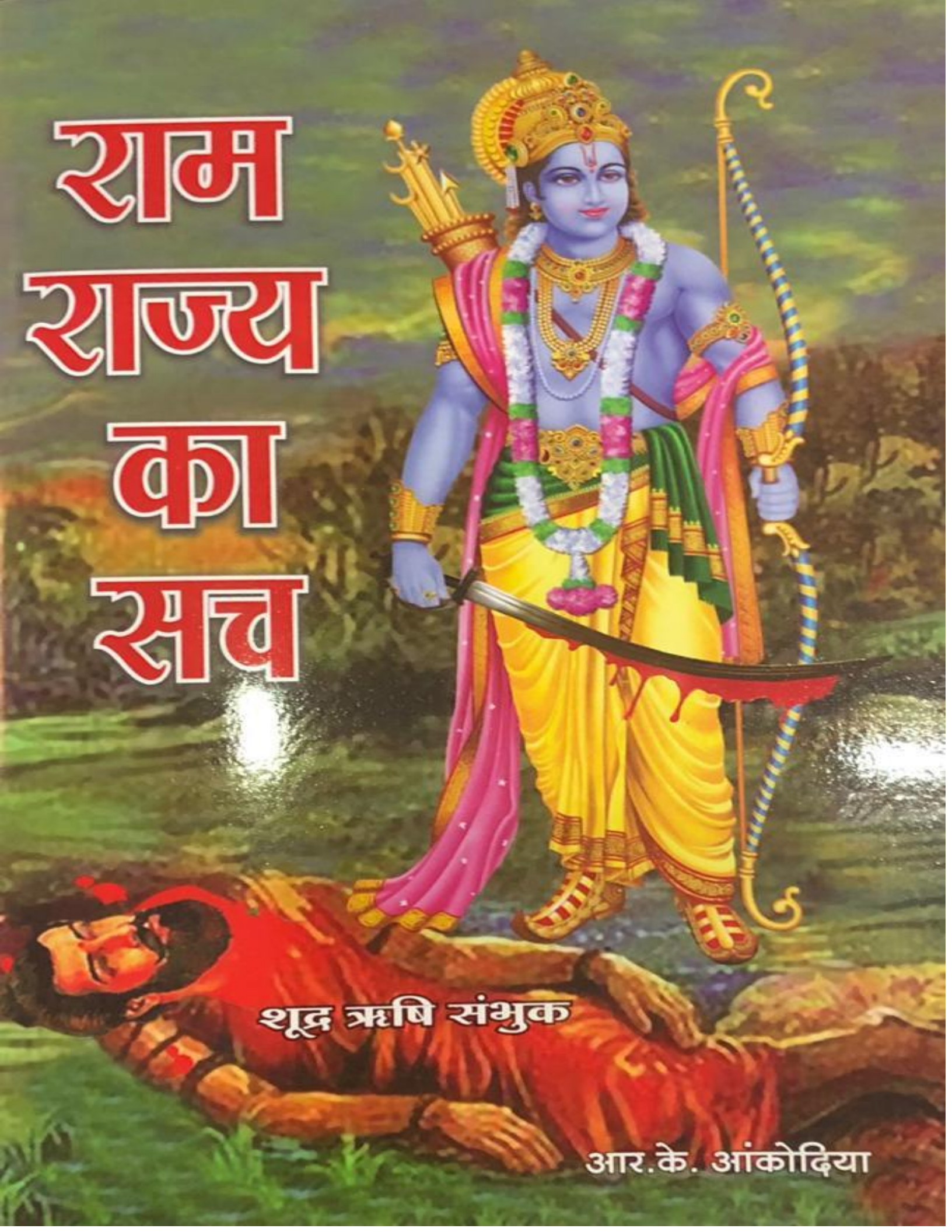

शूद्र ऋषि संभुक

आर.के. आंकोदिया

# राम राज्य का सच

**आर.के. आंकोदिया**
एम.ए., एल.एल.बी.
सेवानिवृत्त जिला एवं सेशन न्यायाधीश
भूतपूर्व सदस्य, राजस्थान राज्य मानव अधिकार आयोग

**आंकोदिया पब्लिकेशन**
**जयपुर, राजस्थान**

यह पुस्तक राम के जीवन, उनकी विचारधारा, शासन प्रणाली की जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से लिखी गई है। अगर इससे किसी को भी आपत्ति हो तो कृपया प्रकाशक या लेखक से सम्पर्क करें इसका न्यायिक क्षेत्राधिकार जयपुर (राजस्थान) रहेगा।

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवाप्रकाशित करने के पूर्व लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

**प्रथम संस्करण : 2016**

**© लेखक**

**प्रकाशक :**

**आंकोदिया पब्लिकेशन्स**

7, हनुमान नगर विस्तार, विष्णु मार्ग,

सिरसी रोड, जयपुर (राजस्थान)

फोन : 0141-2356869

# उद्देशिका

राम को ईश्वर का अवतार माना गया है। सभी हिन्दूओं के आराध्य देव भी घोषित किया है। विश्व हिन्दू परिषद, आर.एस.एस. एवं अन्य इनके अनुसांगिक संगठन अयोध्या में राम मन्दिर बनाने के लिए प्रयासरत हैं लेकिन मामला सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन होने से अमली जामा नहीं पहना पा रहे हैं, बी.जे.पी. के नेता श्री सुब्रमण्यम स्वामी ने देश में राम के एक लाख मन्दिर बनाने की भी घोषणा की है क्योंकि मैं विधिक तौर पर हिन्दू हूँ इसलिए मैंने राम से सम्बन्धित प्रमुख धार्मिक ग्रंथ श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण एवं तुलसीकृत रामचरित मानस में वर्णित तथ्यों, घटनाओं, प्रसंगों को आधार बनाकर राम के जीवन, उनके विचारों, उनके शासनकाल में अपनाई गई नीति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। मुझे यह जानकर घोर दुख भी हुआ कि राम ने आर्यों के प्रथम राजा मनु का वंशज होने के नाते अपने पूर्वज मनु द्वारा स्थापित वर्ण आधारित समाज व्यवस्था को कठोरता से लागू किया है और ब्राह्मण राज की स्थापना को स्थायीत्व प्रदान करने की कोशिश की है जो वर्तमान संदर्भ में स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय पर आधारित समाज व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा है।

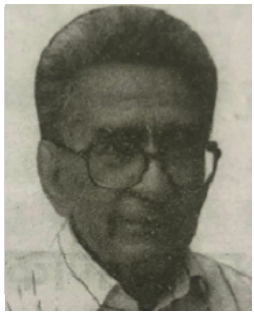

# दो शब्द

हिन्दू धर्म शास्त्रों की काल गणना के अनुसार राम ने त्रेतायुग में जन्म लिया है जिनको ईश्वर का अवतार माना गया है और रामराज्य की महिमा का बखान साधु सन्तों द्वारा कथाओं में किया जाता है।

श्री आर.के. आंकोदिया ने राम से सम्बन्धित प्रमुख धार्मिक ग्रंथों श्री मद्बाल्मीकीय रामायण एवं तुसीस कृत रामचरित मानस में वर्णित तथ्यों, घटनाओं, प्रसंगों को आधार बनाकर राम के जन्म, जन्म लेने के कारण, राम के जीवन, उनके विचारों, उनके द्वारा अपने शासन काल में अपनाई गई नीति पर लिखित पुस्तक **''राम राज्य का सच''** में प्रकाश डाला है। यह एक प्रकार से शोध कार्य है। आशा है यह पुस्तक पाठकों को राम के बारे में सारभूत जानकारी उपलब्ध करा, उनके बारे में फैलाई गई भ्रान्तियों पर विराम लगाने में सफल होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

**(डॉ. घासीराम वर्मा)**
Prof. (Emeritus) of Mathematics
University of Rhode Island
Kingston-R.I. 02881
U.S.A.

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1. | राम का जन्म एवं कारण | 1 |
| 2. | राम का विवाह | 16 |
| 3. | राज सिंहासन के बजाय राम को मिला 14 वर्ष का वनवास | 19 |
| 4. | बाली वध | 34 |
| 5. | राम की बदनसीब पत्नी सीता | 40 |
| 6. | राम ने की शूद्र ऋषि शंभूक की हत्या | 49 |
| 7. | राम मनु के वंशज | 56 |

# राम राज्य का सच

## राम का जन्म एवं कारण

हिन्दू धर्म शास्त्रों की काल गणना के अनुसार चार युग क्रमशः सत्युग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग माने गये हैं। सतयुग को ब्रह्मा विष्णु महेश का युग माना गया है। त्रेतायुग में राम हुए जिनको धर्म शास्त्रों के अनुसार ईश्वर का अवतार माना गया है राम के जन्म, जन्म लेने के कारण, राम के जीवन व उनके शासन को लेकर कई ऋषियों ने ग्रंथ लिखे हैं लेकिन बाल्मीकीय रामायण एवं रामचरित मानस को आधिक महत्व प्राप्त है। बाल्मीकी राम के समकालीन थे और श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण में आये विवरण के अनुसार उनका आश्रम त्रेतायुग में चित्रकूट के पास था। तुलसीदास जी का जन्म सन् 1554 में हुआ तब देश मुगलों का गुलाम था। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना की है जो अब भी उच्चवर्ग में लोकप्रिय है।

राम ने मनुष्य रूप में क्यों जन्म लिया इसका तुलसी कृत रामचरित मानस में बालकाण्ड के निम्न दोहा से प्रकट होता है :

**दो0– बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।**
**निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।।112।।**

ब्राह्मण, गौ, देवता और संतों के लिये भगवान् ने मनुष्य का अवतार लिया। वे माया और उसके गुण (सत्, रज, तम) और बाहरी तथा भीतरी इन्द्रियों से परे हैं। उनका शरीर अपनी इच्छा से ही बना है (किसी कर्मबन्धन से परवश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थों के द्वारा नहीं)।।112।।

राम ने केवल ब्राह्मण, गाय, देव एवं संतों के हित के लिए ही मनुष्य के रूप में जन्म लिया है। जब राम को दशरथ राजा बनाना चाहते थे, तब देव (ब्राह्मण) यह नहीं चाहते थे कि राम अयोध्या में राज करें और देव असुरों, दैत्यों से परेशान रहें इसलिए उन्होंने सरस्वती से विनती की कि राम देवों की रक्षा के लिए राज्य का परित्याग कर वन को प्रस्थान करें।

**दो0– बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु।**
**रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु।।11।।**
**सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछितानी। भइउँ सरोज बिपिन हिमराती।।**
**देखि देव पुनि कहहिं निहोरी। मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी।।**

**बिसमय हरष रहित रघुराऊ। तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ।।**
**जीव करम बस सुख दुख भागी। जाइअ अवध देव हित लागी।।**
**आगिल काजु बिचारि बहोरी। करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी।।**
**हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई। जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई।।**
**बार बार गहि चरन सँकोची। चली बिचारि बिबुध मति पोची।।**
**ऊँच निवासु नीचि करतूती। देखि न सकहिं पराइ बिभूति।।**

**दो0– नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकइ केरि।**
**अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि।।12।।**

वे कहते हैं–हे माता! हमारी बड़ी विपत्ति को देखकर आज वही कीजिये जिससे श्रीरामचन्द्रजी राज्य त्यागकर वन को चले जायें और देवताओं का सब कार्य सिद्ध हो।।11।। देवताओं की विनती सुनकर सरस्वतीजी खड़ी–खड़ी पछता रही है कि (हाय!) मैं कमलवन के लिये हेमन्तऋतु की रात हुई। उन्हें इस प्रकार पछताते देखकर देवता फिर विनय करके कहने लगे – हे माता! इसमें आपको जरा भी दोष न लगेगा।।1।। श्रीरघुनाथजी विषाद और हर्ष से रहित हैं। आप तो श्रीरामजी के सब प्रभाव को जानती ही हैं। जीव अपने कर्मवश ही सुख–दुःख का भागी होता है। अतएव देवताओं के हित के लिये आप अयोध्या जाइये।।2।। बार–बार चरण पकड़कर देवताओं ने सरस्वती को संकोच में डाल दिया। तब वह यह विचार कर चली कि देवताओं की बुद्धि ओछी है। इनका निवास तो ऊँचा है, पर इनकी करनी नीची है। ये दूसरे का ऐश्वर्य नहीं देख सकते। परंतु आगे के काम का विचार करके (श्रीरामजी के वन जाने से राक्षसों का वध होगा, जिससे सारा जगत् सुखी हो जायेगा) चतुर कवि (कामना) करेंगे। ऐसा विचार कर सरस्वती हृदय में हर्षित होकर दशरथजी की पुरी अयोध्या आयीं, मानो दुःसह दुःख देने वाली कोई ग्रहदशा आयी हो।।4।। मंथरा नाम की कैकयी की एक मंदबुद्धि दासी थी, उसे अपयश की पिटारी बनाकर सरस्वती उसकी बुद्धि को फेरकर चली गई।।12।।

इस प्रकार रामचरित मानस के बालकाण्ड में आये उपरोक्त विवरण के अनुसार देव ब्राह्मणों ने राम को राजतिलक से वंचित कर देवों की रक्षा के लिए वन में राक्षसों का संहार करने हेतु विद्या की देवी सरस्वती का सहारा लिया और सरस्वती ने देवों की रक्षा के लिए, रानी कैकयी की दासी मंथरा की बुद्धि को विपरीत दिशा में किया और रानी कैकयी के हठ के कारण राम को 14 वर्ष के लिए वन को प्रस्थान करना पड़ा।

लेकिन श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड में सरस्वती का कहीं उल्लेख नहीं है केवल देव ब्राह्मण व ऋषि ब्रह्मा के पास गये का ही उल्लेख है जिसका विवरण निम्न प्रकार है :

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग–15**

**ताः समेत्य यथान्यायं तस्मिन् सदसि देवताः।**
**अब्रुवँल्लोककर्तारं ब्रह्माणं वचनं ततः।।5।।**
**भगवंस्त्वत्प्रसादेन रावणो नाम राक्षसः।**
**सर्वान् नो बाधते वीर्याच्छासितुं तं न शक्नुमः।।6।।**
**त्वया तस्मै वरो दत्तः प्रीतेन भगवतंस्तदा।**
**मानयन्तश्च तं नित्यं सर्वं तस्य क्षमामहे।।7।।**
**एवमुक्तः सुरैः सर्वेश्चिन्तयित्वा ततोऽब्रवीत्।**
**हन्तायं विदितस्तस्य वधोपायो दुरात्मनः।।12।।**
**तेन गन्धर्वयक्षणां देवतानां च रक्षसाम्।**
**अवध्योऽस्मीति वागुक्ता तथेत्युक्तं च तन्मया।।13।।**
**नाकीर्तयदवज्ञानात् तद् रक्षो मानुषांस्तदा।**
**तस्मात् स मनुषाद् वध्यो मृत्युर्नान्योऽस्य विद्यते।।14।।**
**एतच्छुत्वा प्रियं वाक्यं ब्रह्मणा समुदाहृतम्।**
**देवा महर्षयः सर्वे प्रहृष्टास्तेऽभवंस्तदा।।15।।**
**एवं स्तुतस्तु देवेशो विष्णुस्त्रिदशपुंगवः।।26।।**
**पितामहपुरोगांस्तान् सर्वलोकनमस्कृतः।**
**अब्रवीत् त्रिदशान् सर्वान् समेतान् धर्मसंहितान्।।27।।**
**भयं त्यजत भद्रं वो हितार्थं युधि रावणम्।**
**सपुत्रपौत्रं सामात्यं समन्त्रिज्ञातिबान्धवम्।।28।।**
**हत्वा क्रूरं दुराधर्षं देवर्षीणां भयावहम्।**
**दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।।29।।**

**वत्स्यामि मानुषे लोके पालयन् पृथिवीमिमाम्।**
**एवं दत्त्वा वरं देवो देवानां विष्णुराक्मवान्।।30।।**
**मानुष्ये चिन्तयामास जन्मभूमिमथात्मनः।**

उस यज्ञ-सभा में क्रमशः एकत्र होकर (दूसरों की दृष्टि से अदृश्य रहते हुए) सब देवता लोककर्ता ब्रह्माजी से इस प्रकार बोले - ।।5।। 'भगवन्! रावण नामक राक्षस आपका कृपाप्रसाद पाकर अपने बल से हम सब लोगों को बड़ा कष्ट दे रहा है। हममें इतनी शक्ति नहीं है कि अपने पराक्रम से उसको दबा सकें।।6।। 'प्रभो! आपने प्रसन्न होकर उसे वर दे दिया है तब से हम लोग उस वर का समादर करते हुए उसके सारे अपराधों को सहते चले आ रहे हैं।।7।। समस्त देवताओं के ऐसा कहने पर ब्रह्माजी कुछ सोचकर बोले - 'देवताओं! लो, उस दुरात्मा के वध का उपाय मेरी समझ में आ गया। उसने वर माँगते समय यह बात कही थी कि मैं गन्धर्व, यक्ष, देवता तथा राक्षसों के हाथ से न मारा जाऊँ। मैंने भी 'तथास्तु' कहकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।।12-13।। 'मनुष्यों को वह तुच्छ समझता था, इसलिये उनके प्रति अवहेलना होने के कारण उनसे अवध्य होने का वरदान नहीं माँगा। इसलिये अब मनुष्य के हाथ से ही उसका वध होगा। मनुष्य के सिवा दूसरा कोई उसकी मृत्यु का कारण नहीं है'।।14।। ब्रह्माजी जी की कही हुई यह प्रिय बात सुनकर उस समय समस्त देवता और महर्षि बड़े प्रसन्न हुए।।15।। उनके इस प्रकार स्तुति करने पर सर्वलोक-वन्दित देवप्रवर देवाधिदेव भगवान् विष्णु ने वहाँ एकत्र हुए उन समस्त ब्रह्मा आदि धर्मपरायण देवताओं से कहा - ।।26-27।। 'देवगण! तुम्हारा कल्याण हो। तुम भय को त्याग दो। मैं तुम्हारा हित करने के लिये रावण को पुत्र, पौत्र, अमात्य, मन्त्री और बन्धु-बान्धवों सहित युद्ध में मार डालूँगा। देवताओं तथा ऋषियों को भय देने वाले उस क्रूर एवं दुर्धर्ष राक्षस का नाश करके मैं ग्यारह हजार वर्षों तक इस पृथ्वी का पालन करता हुआ मनुष्य लोक में निवास करूँगा'।।28-29½।। देवताओं को ऐसा वर देकर मनस्वी भगवान् विष्णु ने मनुष्य लोक में पहले अपनी जन्मभूमि के सम्बन्ध में विचार किया।।30½।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण** बालकाण्ड सर्ग-15

**राज्ञो दशरथस्य त्वमयोध्याधिपतेर्विभो।।19।।**
**धर्मज्ञस्य वदान्यस्य महर्षिसमतेजसः।**
**अस्य भार्यासु तिसृषु ह्रीश्रीकीर्त्युपमासु च।।20।।**
**विष्णो पुत्रत्वमागच्छ कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम्।**

**तत्र त्वं मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककण्टकम्।।21।।**

**अवध्यं दैवतैर्विष्णो समरे जहि रावणम्।**

देवों ने प्रार्थना की 'प्रभो! अयोध्या के राजा दशरथ धर्मज्ञ, उदार हैं जो ह्री, श्री और कीर्ति-इन तीन देवियों के समान हैं। विष्णुदेव! आप अपने चार स्वरूप बनाकर राजा की उन तीनों रानियों के गर्भ से पुत्र रूप में अवतार ग्रहण कीजिये। इस प्रकार मनुष्य रूप में प्रकट होकर आप संसार के लिये प्रबल कण्टकरूप रावण को, जो देवताओं के लिये अवध्य है, समरभूमि में मार डालिये।।19-21½।।

## राम का जन्म

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण में राम के जन्म को लेकर भी विचित्र विवरण है। राजा दशरथ को गुरु वशिष्ट एवं अन्य देवों ने सलाह दी कि श्रृंग ऋषि को अश्वमेघ यज्ञ के लिए आमंत्रित किया जाये। श्रृंग ऋषि कैसे आमंत्रित किये जायें, वे ही क्योंकर इस यज्ञ के लिए उपयुक्त हैं। इसका विवरण भी दिया गया है।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग-9**

**काश्यपस्य च पुत्रोऽस्ति विभाण्डक इचित श्रुतः।।3।।**

**ऋष्यश्रृंग इति ख्यातस्तस्य पुत्रो भविष्यति।**

**स वने नित्यसंवृद्धो मुनिर्वनचरः सदा।।4।।**

**नान्यं जानाति विप्रेन्द्रो नित्यं पित्रनुवर्तनात्।**

**द्वैविध्यं ब्रह्मचर्यस्य भविष्यति महात्मनः।।5।।**

**लोकेषु प्रथितं राजन् विप्रैश्च कथितं सदा।**

'उन्होंने कहा था, मुनिवरों! महर्षि कश्यप के विभाण्डक नाम से प्रसिद्ध एक पुत्र है। उनके भी एक पुत्र होगा, जिसकी लोगों में ऋष्यश्रृंग नाम से प्रसिद्धि होगी। वे ऋष्यश्रृंग मुनि सदा वन में ही रहेंगे और वन में हीसदा लालन-पालन पाकर वे बड़े होंगे।।3-4।। 'सदा पिता के हीसाथ रहने के कारण विप्रवर ऋष्यश्रृंग दूसरे किसी को नहीं जानेंगे। राजन्! लोक में ब्रह्मचर्य के दो रूप विख्यात हैं और ब्राह्मणों ने सदा उन दोनों स्वरूपों का वर्णन किया है। एक तो है दण्ड, मेखला आदि धारण रूप मुख्य ब्रह्मचर्य और दूसरा है ऋतुकाल में पत्नी-समागम रूप गौण ब्रह्मचर्य। उन महात्मा के द्वारा उक्त दोनों प्रकार के ब्रह्मचर्यों का पालन होगा।।5½।।

ऋष्यश्रृंगो वनचरस्तपःस्वाध्यायसंयुतः।
अनभिज्ञस्तु नारीणां विषयाणां सुखस्य च।।3।।
गणिकास्तत्र गच्छन्तु रूपवत्यः स्वलंकृताः।
प्रलोभ्य विविधोपायैरानेष्यन्तीह सत्कृताः।।5।।
वारमुक्यास्तु तच्छुत्वा वनं प्रविविशुर्महत्।
आश्रमस्याविदूरेऽस्मिन् यत्नं कुर्वन्ति दर्शने।।7।।
अदृष्टरूपास्तास्तेन काम्यरूपा वने स्त्रियः।
हार्दात्तस्य मतिर्जाता आख्यातुं पितरं स्वकम्।।13।।
इहाश्रमपदोऽस्माकं समीपे शुभदर्शनाः।
करिष्ये केऽत्र पूजां वै सर्वेषां विधिपूर्वकम्।।15।।
ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा सर्वासां मतिरास वै।
तदाश्रमपदं द्रष्टुं जग्मुः सर्वास्तथोऽङ्गनाः।।16।।
गतानां तु ततः पूजामृषिपुत्रश्चकार ह।
इदमर्घ्यमिदं पाद्यमिदं मूलं फलं च नः।।17।।
प्रतिगृह्य तु तां पूजां सर्वा एव समुत्सुकाः।
ऋषेर्भीताश्च शीघ्रं तु गमनाय मतिं दधुः।।18।।
अस्माकमपि मुख्यानि फलानीमानीहे द्विज।
गृहाण विप्र भद्रं ते भक्षयस्व च मा चिरम्।।19।।
ततस्तास्तं समालिङ्ग्य सर्वा हर्षसमन्विताः।
मोदकान् प्रददुस्तस्मै भक्ष्यांश्च विविधाञ्छुभान्।।20।।
चित्राण्यत्र बहूनि स्युर्मूलानि च फलानि च।
तत्राप्येष विशेषेण विधिर्हि भविता ध्रुवम्।।27।।
श्रुत्वा तु वचनं तासां सर्वासां हृदयंगमम्।
गमनाय मतिं चक्रे तं च निन्युस्तथा स्त्रियाः।।28।।

**अन्तःपुरं प्रवेशयास्मै कन्यां दत्त्वा यथाविधि।**

**शान्तां शान्तेन मनसा राजा हर्षमवाप सः।।32।।**

''ऋष्यशृंग मुनि सदा वन में ही रहकर तपस्या और स्वाध्याय में लगे रहते हैं। वे स्त्रियों को पहचानते तक नहीं हैं और विषय के सुख से भी सर्वथा अनभिज्ञ हैं।। ''यदि सुन्दर आभूषणों से विभूषित मनोहर रूप वाली वेश्याएँ वहाँ जायें तो वे भाँति-भाँति के उपायों से उन्हें लुभाकर इस नगर में ले आयेंगी, अतः इन्हें सत्कारपूर्वक भेजना चाहिये'।।5।। 'तब नगर की मुख्य-मुख्य वेश्याएँ राजा का आदेश सुनकर उस महान् वन में गयीं और मुनि के आश्रम से थोड़ी ही दूर पर ठहरकर उनके दर्शन का उद्योग करने लगीं।।7।। ''ऋष्यशृंग ने वन में कभी स्त्रियों का रूप नहीं देखा था और वे स्त्रियाँ तो अत्यन्त कमनीय रूप से सुशोभित थीं, अतः उन्हें देखकर उनके मन में स्नेह उत्पन्न हो गया। इसलिये उन्होंने उनसे अपने पिता का परिचय देने का विचार किया।।13।। ''यहाँ पास ही मेरा आश्रम है। आप लोग देखने में परम सुन्दर हैं। (अथवा आपका दर्शन मेरे लिये शुभकारक है।) आप मेरे आश्रम पर चलें। वहाँ मैं आप सब लोगों की विधिपूर्वक पूजा करूँगा।''।।15।। ''ऋषिकुमार की यह बात सुनकर सब उनसे सहमत हो गयीं। फिर वे सब सुन्दर स्त्रियाँ उनका आश्रम देखने के लिये वहाँ गयीं।।16।। ''वहाँ जाने पर ऋषिकुमार ने 'यह अर्घ्य है, यह पाद्य है तथा यह भोजन के लिये फल-मूल प्रस्तुत है' ऐसा कहते हुए उन सबका विधिपूर्वक पूजन किया। ।।17।। ''ऋषि की पूजा स्वीकार करके वे सभी वहाँ से चली जाने को उत्सुक हुईं। उन्हें विभाण्डक मुनि का भय लग रहा था, इसलिये उन्होंने शीघ्र ही वहाँ से चली जाने का विचार किया।।18।। ''वे बोलीं - 'ब्रह्मन्! हमारे पास भी ये उत्तम-उत्तम फल हैं। विप्रवर! इन्हें ग्रहण कीजिये। आपका कल्याण हो। इन फलों को शीघ्र ही खा लीजिये, विलम्ब न कीजिये''।।19।। ''ऐसा कहकर उन सबने हर्ष में भरकर ऋषि का आलिंगन किया और उन्हें खाने योग्य भाँति-भाँति के उत्तम पदार्थ तथा बहुत सी मिठाइयाँ दीं।।20।। यद्यपि यहाँ नाना प्रकार के फल-मूल बहुत मिलती हैं तथापि वहाँ भी निश्चय ही इन सबका विशेष रूप से प्रबन्ध हो सकता है''।।27।। ''उन सबके मनोहर वचन सुनकर ऋष्यशृंग उनके साथ जाने को तैयार हो गये और वे स्त्रियाँ उन्हें अंगदेश में ले गयीं।।28।। ''तत्पश्चात् ऋष्यशृंग को अन्तःपुर में ले जाकर राजा दशरथ ने शान्तचित्त से अपनी कन्या शान्ता का उनके साथ विधिपूर्वक विवाह कर दिया। ऐसा करके राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई।।32।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग–11**

**पुत्रस्त्वंगस्य राज्ञस्तु रोमपाद इति श्रुतः।**
**तं स राजा दशरथो गमिष्यति महायशः।।4।।**
**अनपत्योऽस्मि धर्मात्मन् शान्ताभर्ता मम क्रतुम्।**
**आहरेत त्वयाऽऽज्ञप्तः संतानार्थं कुलस्य च।।5।।**
**तथेति राजा संश्रुत्य गमनं तस्य धीमतः।।20।।**
**उवाच वचनं विप्रं गच्छ त्वं सह भार्यया।**
**ऋषिपुत्रः प्रतिश्रुत्य तथेत्याह नृपं तदा।।21।।**

अंगदेश के राजकुमार का नाम होगा 'रोमपाद'। महायशस्वी राजा दशरथ उनके पास जायेंगे और कहेंगे – 'धर्मात्मन्! मैं संतानहीन हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो शान्ता के पति ऋष्यशृंग मुनि चलकर मेरा यज्ञ करा दें। इससे मुझे पुत्र की प्राप्ति होगी और मेरे वंश की रक्षा हो जायेगी।'।।3–5।। राजा रोमपाद ने 'बहुत अच्छा' कहकर उन बुद्धिमान् महर्षि का जाना स्वीकार कर लिया और ऋष्यशृंग से कहा–'विप्रवर! आप शान्ता के साथ महाराज दशरथ के यहाँ जाइये।' राजा की आज्ञा पाकर उन ऋषिपुत्र ने 'तथास्तु' कहकर राजा दशरथ को अपने चलने की स्वीकृति दे दी।।20–21।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग–14**

**स चित्यो राजसिंहस्य संतिचः कुशलैर्द्विजैः।**
**गरुडो रुक्मपक्षो वै त्रिगुणोऽष्टादशात्मकः।।29।।**
**शामित्रे तु हयस्तत्र तथा जलचरास्च ये।**
**ऋषिभिः सर्वमेवैतन्नियुक्तं शास्त्रतस्तदा।।31।।**
**पशूनां त्रिशतं तत्र यूपेषु नियतं तदा।**
**अश्वरत्नोत्तमं तत्र राज्ञो दशरथस्य ह।।32।।**
**कौसल्या तं हयं तत्र परिचर्य समन्ततः।**
**कृपाणैर्विशशारैनं त्रिभिः परमया मुदा।।33।।**
**पवत्त्रिणा तदा सार्धं सुस्थितेन च चेतसा।**
**अवसद् रजनीमेकां कौसल्या धर्मकाम्यया।।34।।**

**पतत्त्रिणस्तस्य वपामुद्धृत्य नियतेन्द्रियः।**
**ऋत्विक्परमसम्पन्नः श्रपयामास शास्त्रतः।।36।।**
**हयस्य यानि चांगानि तानि सर्वाणि ब्राह्मणाः।**
**अग्नौ प्रास्यन्ति विधिवत् समस्ताः षोडशर्त्विजः।।39।।**

राजसिंह महाराज दशरथ के यज्ञ में चयन द्वारा सम्पादित अग्नि की कर्मकाण्ड कुशल ब्राह्मणों द्वारा शास्त्रविधि के अनुसार स्थापना की गयी। उस अग्नि की आकृति दोनों पंख और पुच्छ फैलाकर नीचे देखते हुए पूर्वाभिमुख खड़े हुए गरुड़ की-सी प्रतीत होती थी। सोने की ईंटों से पंख का निर्माण होने से उस गरुड़ के पंख सुवर्णमय दिखायी देते थे। प्रकृत-अवस्था में चित्य-अग्नि के छः प्रस्तार होते हैं; किंतु अश्वमेध यज्ञ में उसका प्रस्तार तीन गुना हो जाता है। इसलिये वह गरुड़ की अग्नि अठारह प्रस्तारों से युक्त थी।।29।। शामित्र कर्म में यज्ञीय अश्व तथा कूर्म आदि जलचर जन्तु जो वहाँ लाये गये थे, ऋषियों ने उन सबको शास्त्रविधि के अनुसार पूर्वोक्त यूपों में बाँध दिया।।31।। उस समय उन यूपों में तीन सौ पशु बँधे हुए थे तथा राजा दशरथ का वह उत्तम अश्वरत्न भी वहाँ बाँधा गया था।।32।। रानी कौशल्या ने वहाँ प्रोक्षण आदि के द्वारा सब ओर से उस अश्व का संस्कार करके बड़ी प्रसन्नता के साथ तीन तलवारों से उसका वध किया।।33।। तदनन्तर कौशल्या देवी ने सुस्थिर चित्त से धर्मपालन की इच्छा रखकर उस अश्व के निकट एक रात निवास किया।।34।। इसके बाद परम चतुर जितेन्द्रिय ऋत्विक् ने विधिपूर्वक अश्वकन्द के गूदे को निकालकर शास्त्रोक्त रीति से पकाया।।36।। उस अश्वमेध यज्ञ के अंगभूत जो-जो पदार्थ थे, उन सबको लेकर समस्त सोलह ऋत्विज् ब्राह्मण अग्नि में विधिवत् आहुति देने लगे।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग-15**

**मेधावी तु तथो ध्यात्वा स चिञ्चिदिदमुत्तरम्।**
**लब्धसंज्ञस्ततस्तं तु वेदज्ञो नृपब्रवीत्।।1।।**
**इष्टिं तेऽहं करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणात्।**
**अथर्वशिरसि प्रोक्तैर्मन्त्रैः सिद्धां विधानतः।।2।।**

महात्मा ऋष्यशृंग बड़े मेधावी और वेदों के ज्ञाता थे। उन्होंने थोड़ी देर तक ध्यान लगाकर अपने भावी कर्तव्य का निश्चय किया। फिर ध्यान से विरत हो वे राजा से इस प्रकार बोले-।।1।। 'महाराज! मैं आपको पुत्र की प्राप्ति कराने के लिये अथर्ववेद के मन्त्रों से पुत्रेष्टि

नामक यज्ञ करूँगा। वेदोकति विधि के अनुसार अनुष्ठान करने पर वह यज्ञ अवश्य विधि के अनुसार अनुष्ठान करने पर सफल होगा'।।2।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग–16**

**ततो वै यजमानस्य पावकादतुलप्रभम्।**
**प्रादुर्भूतं महद् भूतं महावीर्यं महाबलम्।।11।।**
**अथो पुनरिदं वाक्यं प्राजापत्यो नरोऽब्रवीत्।**
**राजन्नर्चयता देवानद्य प्राप्तमिदं त्वया।।18।।**
**भार्याणामनुरूपाणामश्नीतेति प्रयच्छ वै।**
**तासु त्वं लप्स्यसे पुत्रान् यदर्शं यजसे नृप।।20।।**
**कौसल्यायै नरपतिः पायसार्धं ददौ तदा।**
**अधादर्धं ददौ चापि सुमित्रायै नराधिपः।।27।।**
**कैकय्यै चावशिष्टार्धं ददौ पुत्रार्थकारणात्।**
**प्रददौ चावशिष्टार्धं पायसस्यामृतोपमम्।।28।।**
**अनुचिन्त्य सुत्रायै पुनरेव महामतिः।**
**एवं तासां ददौ राजा भार्याणां पायसं पृथक्।।29।।**
**ततस्तु ताः प्राश्य तमुत्तमस्त्रियो महीपतेरुत्तमपायसं पृथक्।**
**हुताशनादित्यसमानतेजसोऽचिरेण गर्भान् प्रतिपेदिरे तदा।।31।।**

तत्पश्चात् पुत्रेष्टि यज्ञ करते हुए राजा दशरथ के यज्ञ में अग्निकुण्ड से एक विशालकाय पुरुष प्रकट हुआ। उसके शरीर में इतना प्रकाश था, जिसकी कहीं तुलना नहीं थी। उसका बल–पराक्रम महान् था।।11।। फिर उस प्रज्ञापत्य पुरुष ने पुनः यह बात कही–'राजन! तुम देवताओं की आराधना करते हो; इसलिये तुम्हें आज यह वस्तु प्राप्त हुई है।।18।। 'राजन्! यह खीर अपनी योग्य पत्नियों को दो और कहो–'तुम लोग इसे खाओ।' ऐसा करने पर उनके गर्भ से आपको अनेक पुत्रों की प्राप्ति होगी, जिनके लिये तुम यह यज्ञ कर रहे हो'।।20।। नरेश ने उस समय उस खीर का आधा भाग महारानी कौशल्या को दे दिया। फिर बचे हुए आधे का आधा भाग रानी सुमित्रा को अर्पण किया।।27।। उन दोनों के देने के बाद जितनी खीर बच रही, उसका आधा भाग तो उन्होंने पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य से कैकयी को दे

दिया। तत्पश्चात् उस खीर का जो अवशिष्ट आधा भाग था, उस अमृतोपम भाग को महाबुद्धिमान् नरेश ने कुछ सोच-विचार कर पुनः सुमित्रा को ही अर्पित कर दिया। इस प्रकार राजा ने अपनी सभी रानियों को अलग-अलग खीर बाँट दी।।28-29।। उस उत्तम खीर को खाकर महाराज की उन तीनों साध्वी महारानियों ने शीघ्र ही पृथक्-पृथक् गर्भ धारण किया। उनके वे गर्भ अग्नि और सूर्य के समान तेजस्वी थे।।31।। इस प्रकार कौशल्या ने राम, कैकयी ने भरत तथा सुमित्रा ने लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न को जन्म दिया।

## तुलसी कृत रामचरित मानस के बालकाण्ड के अनुसार –

**सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा।।**
**भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें।।**
**जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा।।**
**यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई।।**
**तबहि रायँ प्रिय नारि बोलाईं। कौसल्यादि तहाँ चलि आईं।।**
**अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा।।**
**कैकई कहँ नृप सौ दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ।।**
**कौसल्या कैकई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि।।**
**एहि बिधि गर्भसहित सब नारी। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी।।**
**जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए।।**

**छं0- भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।**
**हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।**
**लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।**
**भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।**

वसिष्ठजी ने शृंगी ऋषि को बुलवाया और उनसे शुभ पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराया। मुनि के भक्ति सहित आहुतियाँ देने पर अग्निदेव हाथ में चरु (हविष्यान्न खीर) लिये प्रकट हुए।।3।। (और दशरथ से बोले-) वसिष्ठ ने हृदय में जो कुछ विचारा था, तुम्हारा वह सब काम सिद्ध हो गया हे राजन्! (अब) तुम जाकर इस हविष्यान्न (पायस) को, जिसको जैसा उचित हो, वैसा भाग बनाकर बाँट दो।।4।।

उसी समय राजा ने अपनी प्यारी पत्नियों को बुलाया। कोसल्या आदि सब (रानियाँ) वहाँ चली आयीं। राजा ने (पायस का) आधा भाग कौसल्या को दिया, (और शेष) आधे को दो भाग किये।।1।। वह (उनमें से एक भाग) राजा ने कैकयी को दिया। शेष जो बच रहा उसके फिर दो भाग हुए और राजा ने उनको कौसल्या और कैकयी के हाथ पर रखकर (अर्थात् उनकी अनुमति लेकर) और इस प्रकार उनका मन प्रसन्न करके सुमित्रा को दिया।।2।। इस प्रकार सब स्त्रियाँ गर्भवती हुईं। वे हृदय में बहुत हर्षित हुईं। उन्हें बड़ा सुख मिला। जिस दिन से श्रीहरि (लीला से ही) गर्भ में आये, सब लोकों में सुख और सम्पत्ति छा गयी।।3।। दीनों पर दया करने वाले, कौसल्या जी के हितकारी कृपालु प्रभु प्रकट हुए। मुनियों के मन को हरने वाले उनके अद्भुत रूप का विचार करके माता हर्ष से भर गयी। नेत्रों को आनन्द देने वाला मेघ केसमान श्याम शरीर था; चारों भुजाओं में अपने (खास) आयुध (धारण किये हुए) थे; (दिव्य) आभूषण और वनमाला पहने थे; बड़े-बड़े नेत्र थे। इस प्रकार शोभा के समुद्र तथा खर राक्षस को मारने वाले भगवान् प्रकट हुए।।1।।

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण एवं रामचरित मानस के बालकाण्ड में उल्लिखित उपरोक्त तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि दशरथ के संसर्ग से राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का जन्म नहीं हुआ था बल्कि यज्ञ वेदी से अग्निदेव द्वारा प्रकट होकर दी गई खीर के ग्रहण करने से दशरथ की तीनों रानियां गर्भवती हुई थीं, क्या औरत खीर खाने से गर्भवती हो सकती है? यदि खीर खाने से ही बच्चे पैदा होते तो फिर अब क्यों नहीं उत्पन्न हो रहे हैं? जिस श्रृंगी ऋषि को अयोध्या लाने हेतु वेश्याएं भेजी जायें और इस प्रकार के ऋषि से पुत्र प्राप्ति हेतु यज्ञ कराया जाये तो फिर आसानी से समझा जा सकता है कि दशरथ के चारों राजकुमारों राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का जन्म कैसे हुआ होगा?

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड में आये विवरण के अनुसार यज्ञ के लिए तीन सौ पशु-पक्षी यूपो में बांधे गये थे और घोड़ा भी यूपो में बांधा गया था जिनकी यज्ञ में बलि दी गई थी। किसी अन्य धर्मों में किसी भी ईश्वर द्वारा इस प्रकार की घोर हिंसा जन्म लेने के लिए किए जाने का प्रमाण नहीं मिलता है।

ब्रह्मा ने राम के सहयोगी उत्पन्न करने के लिए भी देवों को निम्न आदेश दिए :

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग-17**

**पुत्रत्वं तु गते विष्णौ राज्ञस्तस्य महात्मनः।**
**उवाच देवताः सर्वाः स्वयम्भूर्भगवानिदम्।।1।।**

विष्णोः सहायान् बलिनः सृजध्वं कामरूपिणः।।2।।
मायानिदश्च शूरांश्च वायुवेगसमान् जवे।
नयज्ञान् बुद्धिसम्पन्नान् विष्णुतुल्यपराक्रमान्।।3।।
असंहार्यानुपायज्ञान् दिव्यसंहननान्वितान्।
सर्वास्त्रगुणसम्पन्नानमृतप्राशनानिव ।।4।।
अप्सरस्सु च मुख्यासु गन्धर्वीणां तनूषु च।
यक्षपन्नगरन्यासु ऋक्षविद्याधरीषु च।।5।।
किन्नरीणां च गात्रेषु वानरीणां तनूषु च।
सृजध्वं हरिरूपेण पुत्रांस्तुल्यपराक्रमान्।।6।।
ते तथोक्ता भगवता तत् प्रतिश्रुत्य शासनम्।
जनयामासुरेवं ते पुत्रान् वानररूपिणः।।8।।
वानरेन्द्रं महेन्द्राभमिन्द्रो वालिनमात्मजम्।
सुग्रीवं जनयामास तपनस्तपतां वरः।।10।।
धनदस्य सुतः श्रीमान् वानरो गन्धमादनः।
विश्वकर्मा त्वजनयन्नलं नाम महाकपिम्।।12।।
पावकस्य सुतः श्रीमान् नीलोऽग्निसदृशप्रभः।
तेजसा यशसा वीर्यादत्यरिच्यत वीर्यवान्।।13।।
रूपद्रविणसम्पन्नावश्विनौ रूपसम्मतौ।
मैन्दं च द्विविदं चैव जनयामासतुः स्वयम्।।14।।
मारुतस्यौरसः श्रीमान् हनूमान् नाम वानरः।
वज्रसंहननोपेतो वैनतेयसमो जवे।।16।।
सर्ववानरमुख्येषु बुद्धिमान् बलवानपि।
ते सृष्टा बहुसाहस्रा दशग्रीववधोद्यताः।।17।।
ऋक्षवानरगोपुच्छाः क्षिप्रमेवाभिजज्ञिरे।
यस्य देवस्य यद्रूपं वेषो यश्च पराक्रमः।।19।।

**अजायत समं तेन तस्य तस्य पृथक् पृथक्।**
**गोलांगूलेषु चोत्पन्नाः किंचिदुन्नताविक्रमाः।।20।।**
**अप्सरस्सु च मुक्यासु तथा विद्याधरीषु च।**
**नागकन्यासु च तदा गन्धर्वीणां तनूषु च।**
**कामरूपबलोपेता यथाकामविचारिणः।।24।।**

जब भगवान् विष्णु महामनस्वी राजा दशरथ के पुत्र भाव को प्राप्त हो गये, तब भगवान् ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण देवताओं से इस प्रकार कहा-।।1।। 'देवगण! भगवान् हितैषी हैं। तुम लोग उनके सहायक रूप से ऐसे पुत्रों की सृष्टि करो, जो बलवान्, इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ, माया जानने वाले, शूरवीर, वायु के समान वेगशाली, नीतिज्ञ, बुद्धिमान्, विष्णुतुल्य पराक्रमी, किसी से परास्त न होने वाले, तरह-तरह के उपायों के जानकार, दिव्य शरीरधारी तथा अमृतभोजी देवताओं के समान सब प्रकार की अस्त्रविद्या के गुणों से सम्पन्न हों।। 'प्रधान-प्रधान अप्सराओं, गन्धर्वों की स्त्रियों, यक्ष और नागों की कन्याओं, रीछों की स्त्रियों, विद्याधरियों, किन्नरियों तथा वानरियों के गर्भ से वानर रूप में अपने ही तुल्य पराक्रमी पुत्र उत्पन्न करो।।4-6।। भगवान् ब्रह्मा के ऐसा कहने पर देवताओं ने उनकी आज्ञा स्वीकार की और वानर रूप में अनेकानेक पुत्र उत्पन्न किये।।8।। देवराज इन्द्र ने वानरराज बाली को पुत्र रूप में उत्पन्न किया, जो महेन्द्र पर्वत के समान विशालकाय और बलिष्ठ था। तपने वालों में श्रेष्ठ भगवान् सूर्य ने सुग्रीव को जन्म दिया।।10।। तेजस्वी वानर गन्धमादन कुबेर का पुत्र था। विश्वकर्मा ने नल नामक महान् वानर को जन्म दिया।।12।। अग्नि के समान तेजस्वी श्रीमान् नील साक्षात् अग्निदेव का ही पुत्र था। वह पराक्रमी वानर तेज, यश और बल-वीर्य में सबसे बढ़कर था।।13।। रूप-वैभव से सम्पन्न, सुन्दर रूप वाले दोनों अश्विनी कुमारों ने स्वयं ही मैन्द और द्विविद को जन्म दिया था।।14।। हनुमान नाम वाले ऐश्वर्यशाली वानर वायु देवता के औरस पुत्र थे। उनका शरीर वज्र केसमान सुदृढ़ था। वे तेज चलने में गरुड़ के समान थे।।16।। सभी श्रेष्ठ वानरों में वे सबसे अधिक बुद्धिमान् और बलवान् थे। इस प्रकार कई हजार वानरों की उत्पत्ति हुई। वे सभी रावण का वध करने के लिये उद्यत रहते थे।।17।। रीछ, वानर तथा लंगूर जाति के वीर शीघ्र ही उत्पन्न हो गये। जिस देवता का जैसा रूप, वेष और पराक्रम था, उससे उसी के समान पृथक्-पृथक् पुत्र उत्पन्न हुआ। लंगूरों में जो देवता उत्पन्न हुए, वे देवावस्था की अपेक्षा भी कुछ अधिक पराक्रमी थे।।19-20।। मुख्य-मुख्य अप्सराओं, विद्याधरियों, नागकन्याओं तथा गन्धर्व-पत्नियों के गर्भ से भी

इच्छानुसार रूप और बल से युक्त तथा स्वेच्छानुसार सर्वत्र विचरण करने में समर्थ वानर पुत्र उत्पन्न हुए।।24।।

ब्रह्मा ने राम का सहयोग देने के लिए देवताओं को अप्सराओं, यक्षों, नागकन्याओं, गन्धर्वों, किन्नरों व वानरों की पत्नियों से अवैध सम्बन्ध बनाकर राम के सहयोगी तैयार करने को कहा। देवों ने उपरोक्त जातियों की कन्याओं, औरतों, अप्सराओं से अवैध सम्बन्ध बनाए एवं त्रेतायुग के धर्म की रक्षा के लिए सहयोगी तैयार किये। यदि यह सही माना जाये तो निषाद, जटायु, हनुमान, बाली, सुग्रीव, जामवन्त, नल-नील व अन्य लोग जिन्होंने राम का सहयोग किया सभी अवैध संतानें हैं, क्योंकि ब्रह्मा को सृष्टि का रचियता माना गया है जिसने अपनी स्वयं की लड़की सरस्वती को काम-वासना का शिकार बनाया था। उसे इस प्रकार के ओछे हथकण्डे अपनाने में कतई संकोच नहीं हुआ। देव भी इतने व्याभिचारी, दुराचारी, उदण्ड एवं दुष्ट थे कि ब्रह्मा के एक संकेत मात्र से ही उस समय की अबोध, निरीह जातियों की अविवाहित कन्याओं एवं स्त्रियों का यौन शोषण करने हेतु पिल पड़े और अवैध संतानों का अम्बार लगा दिया। तत्कालीन समाज का क्या हाल हुआ होगा? कितना आतंक छाया होगा व समाज का कितना नैतिक पतन हो गया होगा? यह राम की फौज की स्थिति को भाँपकर लगाया जा सकता है। राम के कारण पूरा पृथ्वी लोक व्याभिचार का अड्डा बन गया होगा। औरतों को पकड़-पकड़कर देवताओं ने अपनी हवश का शिकार बनाकर गर्भवती किया होगा। अन्य धर्मों, इस्लाम, ईसाई यहाँ तक कि बौद्ध, जैन व सिख धर्म के प्रवर्त्तकों ने इस प्रकार के पापाचार, दुष्कर्म अपने आगमन के पूर्व नहीं कराये। इसलिए मेरे विचार में सनातन हिन्दुओं के अलावा अन्य धर्मों के मानने वाले भाग्यशाली हैं कि उनके प्रवर्त्तकों ने समाज को दुराचारियों का अखाड़ा नहीं बनाया और न ही अवतरित होनेके बाद ही बनने दिया।

एक ओर विचारणीय प्रश्न उत्पन्न होता है जैसा कि बालकाण्ड के सर्ग-17 के श्लोक सं. 19-20 से यह ज्ञात होता है कि जिस देवता का जैसा रूप, वेष और पराक्रम था उससे उसी के समान पृथक-पृथक पुत्र उत्पन्न हुए। सभी देव व ऋषि मानव प्राणी थे, जिनसे अवैध सम्बन्ध बनाए वे भी अबोध बालायें व महिलायें थीं फिर बन्दर, लंगूर व भालू के रूप में उन्हें क्यों दर्शाया गया है? भालू, बन्दर एवं लंगूर में भाषा ज्ञान नहीं होता है, वार्तालाप नहीं कर पाते हैं फिर उनसे राम-सीता व रावण ने कैसे बात की होगी? उनकी बोलचाल का माध्यम क्या रहा होगा? यह भी विचार का विषय है।

# राम का विवाह

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण के अनुसार राम का विवाह विदेहराज जनक की पुत्री सीता के साथ हुआ था। सीता राजा जनक की पुत्री नहीं थी। सीता खेत में हल चलाते वक्त मिली थी। राजा जनक ने केवल सीता की परवरिश की थी। असली माँ–बाप का पता–ठिकाना शास्त्रों में नहीं मिलता है। तुलसी कृत रामचरित मानस के बालकाण्ड में आये विवरण के अनुसार राजा जनक ने सीता के स्वयंवर के लिए सभी राजाओं को आमंत्रित किया था लेकिन सीता के विवाह के लिए अयोध्या के राजा को भी आमंत्रित किया हो ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है। मुनि विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को स्वयंवर में लेकर गये थे। राजा जनक ने यह शर्त सीता के विवाह की रखी थी कि जो भी शिव धनुष को उठाकर प्रत्यंचा चढ़ा देगा उसी के गले में सीता वरमाला डालेगी जिसका विवरण रामचरित मानस बालकाण्ड में निम्न प्रकार है –

**सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा।।**
**त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही।।**
**तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं।।**
**जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं।।**
**श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा।।**
**नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने।।**
**दीप दीप के भूपति नाना। आए सुन हम जो पनु ठाना।।**
**देव दनुज धर मनुज सरीरा। बपुल बीर आए रनधीरा।।**
**दो0– कुअँरि मनोहर बिजय बरी कीरति अति कमनीय।**
**पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय।।251।।**
**बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी।।**
**उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा।।**
**गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।।**
**दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडलसम भयऊ।।**
**लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।।**

**तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।**
**चतुर सखीं लखि कहा बुजाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई।।**
**सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।।**
**सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला।।**
**गावहिं छबि अललोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली।।**
**भरि भरि बसहँ अपार कहारा। पठईं जनक अनेक सुसारा।।**
**तुरग लाख रथ सहस पचीसा। सकल सँवारे नख अरु सीसा।।**
**मत्त सहस दस सिंधुर साजे। जिन्हेहि देखि दिसिकुंजर लाजे।।**
**कनक बसन मनि भरि भरि जाना। महिषीं धेनु बस्तु बिधि नाना।।**

उसी शिवजी के कठोर धनुष को आज इस राजसमाज में जो भी तोड़ेगा, तीनों लोकों की विजय के साथ ही उसको जानकीजी बिना किसी विचार के हठपूर्वक वरण करेंगी।।2।।

स्वयंवर में आये राजा तमककर (बड़े ताव से) शिवजी के धनुष की ओर देखतें हैं और फिर निगाह जमाकर उसे पकड़ते हैं, करोड़ों भाँति से जोर लगाते हैं, पर वह उठता ही नहीं। जिन राजाओं के मन में कुछ विवेक है, वे धनुष के पास ही नहीं जाते।।4।।

राजा लोग हृदय से हारकर श्रीहीन (हतप्रभ) हो गये और अपने-अपने समाज में जा बैठे। राजाओं को (असफल) देखकर जनक अकुला उठे और ऐसे वचन बोले जो मानो क्रोध में सने हुए थे।।3।। मैंने जो प्रण ठाना था, उसे सुनकर द्वीप-द्वीप के अनेकों राजा आये। देवता और दैत्य भी मनुष्य का शरीर धारण करके आये तथा और भी बहुत-से रणधीर वीर आये।।4।। परन्तु धनुष को तोड़कर मनोहर कन्या, बड़ी विजय और अत्यन्त सुन्दर कीर्ति को पाने वाला मानो ब्रह्मा ने किसी को रचा ही नहीं।।251।। विश्वामित्रजी शुभ समय जानकर अत्यन्त प्रेमभरी वाणी बोले-हे राम! उठो, शिवजी का धनुष तोड़ो और हे तात! जनक का सन्ताप मिटाओ।।3।। मन-ही-मन उन्होंने गुरु को प्रणाम किया और बड़ी फुर्ती से धनुष को उठा लिया। जब उसे (हाथ में) लिया, तब वह धनुष बिजली की तरह चमका और फिर आकाश में मण्डल-जैसा (मण्डलाकार) हो गया।।3।। लेते, चढ़ाते और जोर से खींचते हुए किसी ने नहीं देखा (अर्थात् ये तीनों काम इतनी फुर्ती से हुए कि धनुष को कब उठाया, कब चढ़ाया और कब खींचा, इसका किसी को पता नहीं लगा); सबने श्रीरामजी को (धनुष खींचे) खड़े देखा। उसी क्षण श्रीरामजी ने धनुष को बीच से तोड़

डाला। भयङ्कर कठोर ध्वनि से (सब) लोक भर गये।।4।। चतुर सखी ने यह दशा देखकर समझाकर कहा–सुहावनी जयमाला पहनाओ। यह सुनकर सीताजी ने दोनों हाथों से माला उठायी, पर प्रेम के विवश होने से पहनायी नहीं जाती।।3।। (उस समय उनके हाथ ऐसे सुशोभित हो रहे हैं) मानो डंडियों सहित दो कमल चन्द्रमा को डरते हुए जयमाला दे रहे हों। इस छबि को देखकर सखियाँ गाने लगीं। तब सीताजी ने श्रीरामजी के गले में जयमाला पहना दी।।4।।

राजा जनक ने शादी में निम्न दहेज भी दिया –

अनगिनत बैलों और कहारों पर भर–भरकर (लाद–लादकर) भेजी गयी। साथ ही जनकजी ने अनेकों सुन्दर शय्याएँ (पलंग) भेजीं। एक लाख घोड़े और पचीस हजार रथ सब नख से शिखा तक (ऊपर से नीचे तक) सजाये हुए।।3।। दस हजार सजे हुए मतवाले हाथी, जिन्हें देखकर दिशाओं के हाथी भी लजा जाते हैं, गाड़ियों में भर–भरकर सोना, वस्त्र और रत्न (जवाहिरात) और भैंस, गाय तथा और भी नाना प्रकार की चीजें दीं।।4।। दहेज प्रथा राम विवाह की ही देन है जिसे स्वतंत्रता के उपरान्त कानून बनाकर अवैध घोषित कर डंदनीय अपराध की संज्ञा दी गई है।

## राज सिंहासन के बजाय राम को मिला 14 वर्ष का वनवास

राम राजा दशरथ के सबसे ज्येष्ठ पुत्र थे और सबसे बड़े पुत्र होने के कारण राज सिंहासन के अधिकारी थे। लेकिन रानी कैकयी को दिए वचन के वशीभूत दशरथ ने कैकयी पुत्र भरत को अयोध्या का राज सिंहासन व राम को 14 वर्ष तक वनवास का आदेश दिया। राम ने दशरथ के आदेश को शिरोधार्य किया लेकिन लक्ष्मण को राजा दशरथ का उक्त आदेश उचित नहीं लगा। लक्ष्मण ने रानी कौशल्या से कहा –

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग–21**

**न रोचते ममाप्येतदार्ये यद् राघवो वनम्।**
**त्यक्त्वा राज्यश्रियं गच्छेत् स्त्रिया वाक्यवशंगतः।।2।।**
**विपरीतश्च वृद्धश्ट विषयैश्च प्रधर्षितः।**
**नृपः किमिव न ब्रूयाच्चोद्यमानः समन्मथः।।3।।**
**नास्यापराधं पस्यामि नापि दोषं तथाविधम्।**
**येन निर्वास्यते राष्ट्राद् वनवासाय राघवः।।4।।**

**देवकल्पमृजुं दान्तं रिपूणामपि वत्सलम्।**
**अवेक्षमाणः को धर्मं त्यजेत् पुत्रकारमात्।।6।।**

'बड़ी माँ मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता कि श्रीराम राज्यलक्ष्मी का परित्याग करके वन में जायें। महाराज तो इस समय स्त्री की बात में आ गये हैं, इसलिये उनकी प्रकृति विपरीत हो गयी है। एक तो वे बूढ़े हैं, दूसरे विषय में उन्हें वश में कर लिया है; अतः कामदेव के वशीभूत हुए वे नरेश कैकयी-जैसी स्त्री की प्रेरणा से क्या नहीं कर सकते हैं।।2-3।। 'मैं श्रीरघुनाथजी का ऐसा कोई अपराध या दोष नहीं देखता, जिससे इन्हें राज्य से निकाला जाय और वन में रहने के लिये विवश किया जाय।।4।। 'धर्म पर दृष्टि रखने वाला कौन ऐसा राजा होगा, जो देवता के समान शुद्ध, सरल, जितेन्द्रिय और शत्रुओं पर भी स्नेह रखने वाले (श्रीराम जैसे) पुत्र का अकारण परित्याग करेगा?।।6।। 'जो पुनः बालभाव (विवेकशून्यता) को प्राप्त हो गये हैं, ऐसे राजा के इस वचन को राजनीति का ध्यान रखने वाला कौन पुत्र अपने हृदय में स्थान दे सकता है?'

लक्ष्मण ने राम से कहा -

**यावदेव न जानाति कश्चिदर्थमिमं नरः।**
**तावदेव मया सार्धमात्मस्थं कुरु शासनम्।।8।।**
**मया पार्श्वे सधनुषा तव गुप्तस्य राघव।**
**कः समर्थोऽधिकं कर्तुं कृतान्तस्येव तिष्ठतः।।9।।**
**निर्मनुष्यामिमां सर्वामयोध्यां मनुजर्षभ।**
**करिष्यामि शरैस्तीक्ष्णैर्यदि स्थास्यति विप्रिये।।10।।**
**भरतस्याथ पक्ष्यो वा यो वास्य हितमिच्छति।**
**सर्वांस्तांश्च वधिष्यामि मृदुर्हि परिभूयते।।11।।**
**प्रोत्साहितोऽयं कैकेय्या संतुष्टो यदि नः पिता।**
**अमित्रभूतो निःसङ्गं वध्यतां वध्यतामपि।।12।।**
**त्वया चैव मया चैव कृत्वा वैरमनुत्तमम्।**
**कास्य शक्तिः श्रियं दातुं भरतायारिशासन।।15।।**
**हनिष्ये पितरं वृद्धं कैकय्यासक्तमानसम्।**
**कृपणं च स्थितं बाल्ये वृद्धभावेन मर्हितम्।।19।।**

**एतत् तु वचनं श्रुत्वा लक्ष्मणस्य महात्मनः।**
**उवाच रामं कौसल्या रुदती शोकलालसा।।20।।**
**भ्रातुस्ते वदतः पुत्र लक्ष्मणस्य श्रुतं त्वया।**
**यदत्रानन्तरं तत्त्वं कुरुष्व यदि रोचते।।21।।**
**यदि त्वं यास्यसि वनं त्यक्त्वा मां शोकलालसाम्।**
**अहं प्रायमिहासिष्ये न च शक्ष्यामि जीवितुम्।।27।।**

'रघुनन्दन! जब तक कोई भी मनुष्य आपके वनवास की बात को नहीं जानता है, तब तक ही, आप मेरी सहायता से इस राज्य के शासन की बागडोर अपने हाथ में ले लीजिये।।8।। 'रघुवीर! जब मैं धनुष लिये आपके पास रहकर आपकी रक्षा करता रहूँ और आप काल के समान युद्ध के लिये डट जायें, उस समय आपसे अधिक पौरुष प्रकट करने में कौन समर्थ हो सकता है?।।9।। 'नरश्रेष्ठ! यदि नगर के लोग विरोध में खड़े होंगे तो मैं अपने तीखे बाणों से सारी अयोध्या को मनुष्यों से सूनी कर दूँगा।।10।। 'जो-जो भरत का पक्ष लेगा अथवा केवल जो उन्हीं का हित चाहेगा, उन सबका मैं वध कर डालूँगा; क्योंकि जो कोमल या नर्म होता है, उसका सभी तिरस्कार करते हैं।।11।। 'यदि कैकयी के प्रोत्साहन देने पर उसके ऊपर संतुष्ट हो पिताजी हमारे शत्रु बन रहे हैं तो हमें भी मोह-ममता छोड़कर इन्हें कैद कर लेना या मार डालना चाहिये।।12।। 'शत्रुदमन श्रीराम! आपके और मेरे साथ भारी वैर बाँधकर इनकी क्या शक्ति है कि यह राज्यलक्ष्मी ये भरत को दे दें?।।15।। 'जो कैकयी में आसक्तचित्त होकर दीन बन गये हैं, बालभाव (अविवेक) में स्थित हैं और अधिक बुढ़ापे के कारण निन्दित हो रहे हैं, उन वृद्ध पिता को मैं अवश्य मार डालूँगा'।।19।। महामनस्वी लक्ष्मण के ये ओजस्वी वचन सुनकर शोकमग्न कौशल्या श्रीराम से रोती हुई बोलीं-।।20।। 'बेटा! तुमने अपने भाई लक्ष्मण की कही हुई सारी बातें सुन लीं, यदि जँचे तो अब इसके बाद तुम जो कुछ करना उचित समझो, उसे करो।।21।। 'यदि तुम मुझे शोक में डूबी हुई छोड़कर वन को चले जाओगे तो मैं उपवास करके प्राण त्याग दूँगी, जीवित नहीं रह सकूँगी।।27।। लेकिन राम ने न केवल लक्ष्मण का प्रस्ताव ठुकरा दिया बल्कि माता कौशल्या की विनती को भी दरकिनार कर दिया। लेकिन लक्ष्मण व सीता को वे उनके तर्कों से सहमत होकर वन में साथ ले जाने को तैयार हो गये। नगरवासी जो उनके साथ वन में जाना चाहते थे उनको भी समझा-बुझाकर वापस अयोध्या चले जाने का आग्रह किया। वन प्रस्थान के पूर्व राम नहीं चाहते थे कि उनके वन में जाने के बाद ब्राह्मणों

को किसी प्रकार की आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़े इसलिए राम ने लक्ष्मण से कहा –

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग–32**

**अगस्त्यं कौशिकं चैव तावुभौ ब्राह्मणोत्तमौ।**
**अर्चयाहूय सौमित्रे रत्नैः सस्यमिवाम्बुभिः।।13।।**
**तप्रयस्व महाबाहो गोसहस्रेण राघव।**
**सुवर्णरजतैश्चैव मणिभिश्च महाधनैः।।14।।**
**कौसल्यां च य आशीर्भिर्भक्तः पर्युपतिष्ठति।**
**आचार्यस्तैत्तिरीयाणाभिरूपश्च वेदवित्।।15।।**
**तस्य यानं च दासीश्च सौमित्रे सम्प्रदाय।**
**कौशेयानि च वस्त्राणि यावत् तुष्यति स द्विजः।।16।।**

'सुमित्रानन्दन! अगस्त्य और विश्वामित्र दोनों उत्तम ब्राह्मणों को बुलाकर रत्नों द्वारा उनकी पूजा करो। महाबाहु रघुनन्दन! जैसे मेघ जल की वर्षा द्वारा खेती को तृप्त करता है, उसी प्रकार तुम उन्हें सहस्रों गौओं, सुवर्णमुद्राओं, रजतद्रव्यों और बहुमूल्य मणियों द्वारा संतुष्ट करो।।13–14।। 'लक्ष्मण! यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा का अध्ययन करने वाले ब्राह्मणों के जो आचार्य और सम्पूर्ण वेदों के विद्वान् हैं, साथ ही जिनमें दान प्राप्ति की योग्यता है तथा जो माता कौशल्या के प्रति भक्तिभाव रखकर प्रतिदिन उनके पास आकर उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हैं, उनको सवारी, दास–दासी, रेशमी वस्त्र और जितने धन से ब्राह्मणदेवता संतुष्ट हों, उतना धन खजाने से दिलवाओ।।15–16।।

**स राममासाद्य तदा त्रिजटो वाक्यमब्रवीत्।**
**निर्धनो बहुपुत्रोऽस्मि राजपुत्र महाबल।।34।।**
**क्षतवृत्तिर्वने नित्यं प्रत्यवेक्षस्व मामिति।**
**तं परिष्वज्य धर्मात्मा आ तस्मात् सरयूतटातं।**
**आनायामास ता गावस्त्रिजटस्याश्रमं प्रति।।39।।**
**ब्रवीमि सत्येन न ते स्म यन्त्रणां धनं हि यद्यन्मम विप्रकारणात्।**
**भवत्सु सम्यक्प्रतिपादनेन मयार्जितं चैव यशस्करं भवेत्।।42।।**

उस समय श्रीराम के पास पहुँचकर त्रिजटने कहा–'महाबली राजकुमार! मैं निर्धन हूँ, मेरे बहुत–से पुत्र हैं, जीविका नष्ट हो जाने से सदा वन में ही रहता हूँ, आप मुझ पर कृपादृष्टि कीजिये'।।34½।। धर्मात्मा श्रीराम ने त्रिजट को छाती से लगा लिया और उसे सरयू तट से लेकर उस पार गिरे हुए डंडे के स्थान तक जितनी गौएँ थीं, उन सबको मँगवाकर त्रिजट के आश्रम पर भेज दिया।।39।। मैं सच कहता हूँ कि इसमें आपके लिये कोई संकोच की बात नहीं है। मेरे पास जो–जो धन है, वह सब ब्राह्मणों के लिये ही है। आप जैसे ब्राह्मणों को शास्त्रीय विधि के अनुसार दान देने से मेरे द्वारा उपार्जित किया हुआ धन मेरे यश की वृद्धि करने वाला होगा'।।42।। **ऐसा प्रतीत होता है कि राम को भरत पर भी विश्वास नहीं था कि वे उनके वनवास के दौरान ब्राह्मणों की आजीविका व मान–सम्मान का ख्याल रखेंगे।**

**तुसलीकृत रामचरित मानस**

**मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं।।**
**मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू।।**

**– अयोध्याकाण्ड**

**सकल तला बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहँ गज पंचानन।।**
**आवत पंथ कबंध निपाता। तेहिं सब कही साप कै बाता।।**

**– अरण्यकाण्ड**

**दुरबासा मोहि दीन्ही सापा। प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा।।**
**सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही।।**
**दो0– मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भुसुर सेव।**
**मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकें सब देव।।33।।**
**सापत ताड़त पुरुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिं संता।।**
**पूजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना।।**
**भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी।।**
**प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती।।**

राम ने कहा–क्योंकि जिनसे मुनि और तपस्वी दुःख पाते हैं, वे राजा बिना अग्नि के ही (अपने दुष्ट कर्मों से ही) जलकर भस्म हो जाते हैं। ब्राह्मणों का संतोष सब मङ्गलों की

जड़ है और भूदेव ब्राह्मणों का क्रोध करोड़ों कुलों को भस्म कर देता है।।2।। श्रीरामजी ने रास्ते में आते हुए कबंध राक्षस को मार डाला। उसने अपने शाप की सारी बात कही।।3।। (वह बोला-) दुर्वासाजी ने मुझे शाप दिया था। (श्रीरामजी ने कहा-) हे गन्धर्व! सुनो, मैं तुम्हें कहता हूँ, ब्राह्मण कुल से द्रोह करने वाले मुझे नहीं सुहाते।।4।। मन, वचन और कर्म से कपट छोड़कर जो भूदेव ब्राह्मणों की सेवा करता है, मुझ समेत ब्रह्मा, शिव आदि सब देवता उसके वश में हो जाते हैं।।33।। शाप देता हुआ, मारता हुआ और कठोर वचन कहता हुआ भी ब्राह्मण पूजनीय है, ऐसा संत कहते हैं। शील और गुण से हीन भी ब्राह्मण पूजनीय है। और गुणगणों से युक्त और ज्ञान में निपुण शूद्र भी पूजनीय नहीं है।।1।। अब मैं भक्ति के साधन विस्तार से कहता हूँ-यह सुगम मार्ग है, जिससे जीव मुझको सहज ही पा जाते हैं। पहले तो ब्राह्मणों के चरणों में अत्यन्त प्रिति हो और वेद की रीति के अनुसार अपने-अपने (वर्णाश्रम के) कर्मों में लगा रहे।।।3।।

राम को केवल ब्राह्मणों के मान-सम्मान व आर्थिक हितों की ही चिन्ता रहती थी। उनके अनुसार ज्ञान व गुण रहित ब्राह्मण भी पूजन योग्य है अर्थात् यदि ब्राह्मण दुराचारी, चोर-उच्चका, अत्याचारी, ढीठ, मक्कार, पापी, क्रोधी, लोभी व दुष्ट प्रकृति का है फिर भी सम्मान व सत्कार का पात्र है। इसके विपरीत यदि शूद्र सज्जन, बुद्धिमान, चरित्रवान, सत्यवादी एवं सदाचारी है फिर भी तिरस्कार का पात्र है। राम ने तो ब्राह्मण को इतना शक्तिशाली, पराक्रमी व चमत्कारी करार दे दिया कि जो मन, वचन, कर्म से ब्राह्मण की सेवा करता है तो वह उनके स्वयं के अलावा ब्रह्मा, शिव व देवता उसके वश में हो जाते हैं। ब्राह्मण से द्रोह करने वाला राम को कतई पसन्द नहीं है। राम के लिए ब्राह्मण के अलावा बाकी तीनों वर्णों क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र तथा स्त्रियां फालतू के जीव हैं और वे राम की दया के पात्र नहीं हैं।

राम ने लक्ष्मण एवं सीता के साथ गोमती नदी को पार किया।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग-50**

**मध्येन मूदितं रम्योद्यानसमाकुलम्।**
**राज्यम भोज्यं नरेन्द्रणां ययौ धृतिमतां वरः।।11।।**
**आश्रमैरविदूरस्थैः श्रीमिद्भिः समलंकृताम्।**
**कालेऽप्सरोभिर्हृष्टाभिः सेविताम्भोह्रदां शिवाम्।।13।।**
**देवाक्रीडशताकीर्णां देवोद्यानयुतां नदीम्।**
**देवार्थमाकाशगतां विख्यातां देवपद्मिनीम्।।15।।**

कौशल देश से आगे बढ़ने पर धैर्यवानों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी मध्यम मार्ग से ऐसे राज्य में होकर निकले, जो सुख-सुविधा से युक्त, धन-धान्य से सम्पन्न, रमणीय उद्यानों से व्याप्त तथा सामन्त नरेशों के उपभोग में आने वाला था।।11।। गंगा नदी को पार कर किनारे-किनारे चले। उनके तट पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर बहुत-से सुन्दर आश्रम बने थे, जो उन देव नदी की शोभा बढ़ाते थे। समय-समय पर हर्ष भरी अप्सराएँ भी उतरकर उनके जलकुण्ड का सेवन करती हैं। वे गङ्गा सबका कल्याण करने वाली है।।13।। गङ्गा के दोनों तटों पर देवताओं के सैकड़ों पर्वतीय क्रीड़ास्थल हैं। उनके किनारे देवताओं के बहुत-से उद्यान भी हैं। वे देवताओं की क्रीड़ा के लिये आकाश में भी विद्यमान हैं और वहाँ देवपद्मिनी के रूप में विख्यात हैं।।15।। गंङ्गा के किनारे देव ब्राह्मणों के सैकड़ों उद्यानों, क्रीड़ा-स्थलों, मुनियों के आश्रमों का तो अवलोकन कर राम को हर्ष हुआ **लेकिन उन अनगिनत शूद्रों की आर्थिक बदहाली व कष्टों को अनदेखा किया जिनको आर्य ब्राह्मणों ने शिक्षा, सम्पत्ति व आत्मरक्षा के अधिकार से वंचित कर बेबस, लाचार व आर्थिक बदहाली का शिकार बनाया था। जिनको ब्राह्मणों ने उनका भी भगवान बना दिया।**

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग-54**

**धन्विनौ तौ सुखं गत्वा लम्बमाने दिवाकरे।**
**गङ्गायमुनयोः संधौ प्रापतुर्निलयं मुनेः।।8।।**
**अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्योः समागमे।**
**पुण्यश्च रमणीयश्च वसत्विह भवान् सुखम्।।22।।**
**एकान्ते पस्य भगवन्नाश्रमस्थानमुत्तमम्।**
**रमते यत्र वैदेही सुखार्हा जनकात्मजा।।26।।**
**रात्र्यां तु तास्यां व्युष्टायां भरद्वाजोऽब्रवीदिदम्।**
**मधुमूलफलोपेतं चित्रकूटं व्रजेति ह।।38।।**
**वासमौपयिकं मन्ये तव राम महाबल।**

इस प्रकार बातचीत करते हुए वे दोनों धनुर्धर वीर श्रीराम और लक्ष्मण सूर्यास्त होते-होते गङ्गा-यमुना के सङ्गम के समीप मुनिवर भारद्वाज के आश्रम पर जा पहुँचे।।8।। मुनी भारद्वाज ने राम से कहा - 'गङ्गा और यमुना-इन दोनों महानदियों के संगम के पास का यह

स्थान बड़ा ही पवित्र और एकान्त है। यहाँ की प्राकृतिक छटा भी मनोरम है, अतः तुम यहीं सुखपूर्वक निवास करो'।।22।। राम ने मुनि भारद्वाज से कहा–'भगवन्! किसी एकान्त प्रदेश में आश्रम के योग्य उत्तम स्थान देखिये (सोचकर बताइये), जहाँ सुख भोगने के योग्य विदेहराजकुमारी जानकी प्रसन्नतापूर्वक रह सकें'।।26।। रात बीतने और सबेरा होने पर श्रीराम के इस प्रकार पूछने पर भारद्वाजजी ने कहा–'महाबली श्रीराम! तुम मधुर फल–मूल से सम्पन्न चित्रकूट पर्वत पर जाओ। मैं उसी को तुम्हारे लिये उपयुक्त निवास स्थान मानता हूँ।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग–55**

**क्रोशमात्रं तथो गत्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।**

**बहून् मेध्यान् मृगान् हत्वा चेरतुर्यमुनावने।।32।।**

इस तरह एक कोस की यात्रा करके दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण (प्राणियों के हित के लिये) मार्ग में मिले हुए हिंसक पशुओं का वध करते हुए यमुना के तटवर्ती वन में विचरने लगे।।32।।

**श्रीमद्बाल्मीकिय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग–56**

**ततस्तौ पाजचारेण गच्छन्तौ सह सीतया।**

**रम्यमासेदतुः शैलं चित्रकूटं मनोरमम्।।12।।**

**इति सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च कृताञ्जलिः।**

**अभिगम्याश्रमं सर्वे बाल्मीकिमभिवादयन्।।16।।**

**लक्ष्मणानय दारूणि दृढानि व चराणि च।**

**कुरुष्वावसथं सौम्य वासे मेऽभिरतं मनः।।19।।**

**तस्य तद् वचनं श्रुत्वा सौमित्रिर्वविदान् द्रुमान्।**

**आजहार ततश्चक्रे पर्णशालामरिंदमः।।20।।**

**इष्ट्वा देवगमान् सर्वान् विवेशावसथं शुचिः।**

**बभूव च मनोह्लादो रामस्यामिततेजसः।।30।।**

सीता के साथ दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण पैदल ही यात्रा करते हुए यथासमय रमणीय एवं मनोरम पर्वत चित्रकूट जा पहुँचे।।12।। ऐसा निश्चय करके सीता, श्रीराम और

लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर महर्षि बाल्मिकी के आश्रम में प्रवेश किया और सबने उनके चरणों में मस्तक झुकाया।।16।। 'सौम्य लक्ष्मण! तुम जंगल से अच्छी-अच्छी मजबूत लकड़ियाँ ले आओ और रहने के लिये एक कुटी तैयार करो। यहां निवास करने को मेरा जी चाहता है'।।19।। श्रीराम की यह बात सुनकर शत्रुदमन लक्ष्मण अनेक प्रकार के वृक्षों की डालियाँ काट लाये और उनके द्वारा एक पर्णशाला तैयार की।।20।। समस्त देवताओं का पूजन करके पवित्र भाव से श्रीराम ने पर्णकुटी में प्रवेश किया। उस समय अमित-तेजस्वी श्रीराम के मन में बड़ा आह्लाद हुआ।।30।। यदि राम ईश्वर व सर्वज्ञाता थे तो फिर पर्णकुटी में प्रवेश के पूर्व देवताओं के पूजन व अनुष्ठान की क्या आवश्यकता थी? गृह प्रवेश के पूर्व अनुष्ठान की परम्परा राम की ही देन है।

भरत को राम का वनवास स्वीकार्य नहीं था। इसलिए वे राम को मनाने व वापिस अयोध्या का राज संभालने के लिए उनसे प्रार्थना की लेकिन राम राजी नहीं हुए तब वे राम की पादुकाएँ लेकर अयोध्या के लिए रवाना हो गये।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग-116**

**प्रतियाते तु भरते वसन् रामस्तदा वने।**
**लश्रयामास सोद्वेगमथौत्सुक्यं तपस्विनाम्।।1।।**
**अथर्षिर्जरया वृद्धस्तपसा च जरां गतः।**
**वेपमान इवोवाच रामं भूतदयापरम्।।8।।**
**त्वन्निमित्तमिदं तावत् तापसान् प्रति वर्तते।**
**रक्षोभ्यस्तेन संविग्नाः कथयन्ति मिथः कथाः।।10।।**
**तत् पुरा राम शारीरीमुपहिंसां तपस्विषु।**
**दर्शयन्ति हि दुष्टास्ते त्यक्ष्याम इममाश्रमम्।।19।।**

भरत के लौट जाने पर श्रीरामचन्द्रजी उन दिनों जब वन में निवास करने लगे, तब उन्होंने देखा कि वहाँ के तपस्वी उद्विग्न हो वहाँ से अन्यत्र चले जाने के लिये उत्सुक हैं।।1।। श्रीराम के इस प्रकार पूछने पर एक महर्षि जो जरावस्था के कारण तो वृद्ध थे ही, तपस्या द्वारा भी वृद्ध हो गये थे, समस्त प्राणियों पर दया करने वाले श्रीराम से काँपते हुए-से बोले-।।8।। 'आप के ही कारण तापसों पर यह राक्षसों की ओर से भय उपस्थित होने वाला है, उससे उद्विग्न हुए ऋषि आपस में कुछ बातें (कानाफूसी) कर रहे हैं।।10।। 'श्रीराम! वे दुष्ट राक्षस तपस्वियों की शारीरिक हिंसा का प्रदर्शन करें, इसके पहले ही हम

इस आश्रम को त्याग देंगे।।19।। उन सब ऋषियों के चले जाने पर श्रीरामचन्द्रजी ने जब बारंबार विचार किया, तब उन्हें बहुत-से ऐसे कारण ज्ञात हुए, जिनसे उन्होंने स्वयं भी वहाँ रहना उचित नहीं समझा। राम अपनी पत्नी सीता व लक्ष्मण के साथ अत्रि ऋषि के आश्रम पर गये। अत्रि ऋषि व उनकी पत्नी अनुसूया ने उनका स्वागत किया और कहा कि पास में दण्डकारण्य नामक वन है। ब्राह्मण ऋषियों ने कहा-'राघवेन्द्र! जो तपस्वी और ब्रह्मचारी यहाँ अपवित्र अथवा असावधान अवस्था में मिल जाता है, उसे वे राक्षस और हिंसक जन्तु इस महान् वन में खा जाते हैं, अतः आप उन्हें रोकिये-यहाँ से मार भगाइये। तपस्वी ब्राह्मणों ने हाथ जोड़कर जब ऐसी बातें कहीं और उनकी मङ्गलयात्रा के लिये स्वस्तिवाचन किया, तब शत्रुओं को संताप देने वाले श्रीराम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ उस वन में प्रवेश किया, मानो सूर्यदेव मेघों की घटा के भीतर घुस गये हों।।22।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग-1, 4 एवं 5**

**प्रविश्य तु महारण्यं दण्डकारण्यमात्मवान्।**
**रामो ददर्श दुर्धर्षस्तापसाश्रममण्डलम्।।1।।**
**तदेव रामेण निशम्य भाषितं कृता मतिस्तस्य बिलप्रवेशने।**
**बिलं च तेनातिबलेन रक्षसा प्रवेश्यमानेन वनं विनादितम्।।32।।**
**प्रहृष्टरूपाविव रामलक्ष्मणौ विराधमुर्व्यां प्रदरे निपात्य तम्।**
**ननन्दतुर्वीतभयौ महावने शिलाभिरन्तर्दधतुश्च राक्षसम्।।33।।**

दण्डकारेण नामक महान् वन में प्रवेश करके मन को वश में रखने वाले दुर्जय वीर श्रीराम ने तपस्वी मुनियों के बहुत-से आश्रम देखे।।1।। वन में आगे बढ़ने पर राक्षस विराध से राम लक्ष्मण का मुकाबला हुआ। विराध को शस्त्रों से मारना असंभव जानकर उसकी कही हुई उसी बात को सुनकर श्रीराम ने उसे गड्ढे में गाड़ देने का विचार किया था। जब वह गड्ढे में डाला जाने लगा, उस समय उस अत्यन्त बलवान् राक्षस ने अपनी चिल्लाहट से सारे वन प्रान्त को गुँजा दिया। राक्षस विराध को पृथ्वी के अंदर गड्ढे में गिराकर श्रीराम और लक्ष्मण ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उसे ऊपर से बहुतेरे पत्थर डालकर पाट दिया। फिर वे निर्भय हो उस महान् वन में सानन्द विचरने लगे।।33।। राम ने तपस्यारत शरभंङ्ग मुनि से मुलाकात कर निवास के लिए उपयुक्त स्थान की प्रार्थना की। इस पर शरभंङ्ग मुनि ने सुतीक्ष्ण मुनि से मिलने को कहा और कहा वे ही निवास की व्यवस्था करेंगे। वहाँ पर बहुत से मुनि राम से मिलने आये।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग–6**

**वैखानसा वालखिल्याः सम्प्रक्षाला मरीचिपाः।**
**अश्मकुट्टाश्च बहवः पत्राहाराश्च तापसाः।।2।।**
**दन्तोलूखलिनश्चैव तथैवोन्मज्जकाः परे।**
**गात्रशय्या अशय्याश्च तथैवानवकाशिकाः।।3।।**
**मुनयः सलिलाहारा वायुभक्षास्तथापरे।**
**आकाशनिलयाश्चैव तथा स्थण्डिलशायिनः।।4।।**
**तथोर्ध्ववासिनो दान्तास्तथाऽऽर्द्रपटवाससः।**
**सजपाश्च तपोनिष्ठास्तथा पञ्चतपोऽन्विताः।।5।।**
**एवं वयं न मुष्यामो विप्रकारं तपस्विनाम्।**
**क्रियमाणं वने घोरं रक्षोभिर्भीमकर्मभिः।।18।।**
**ततस्त्वां शरमार्थं च शरण्यं समुपस्थिताः।**
**परिपालय नो राम वध्यमानान् निशाचरैः।।19।।**

उनमें वैखानस[1], वालखिल्य[2], सम्प्रक्षाल[3], मरीचिप[4], बहुसंख्यक अश्मकुट्ट[5], पत्राहार[6], दन्तोलूखली[7], उन्मज्जक[8], गात्रशय्य[9], अशय्य[10], अनवकाशिक[11], सलिलाहार[12],वायुभक्ष[13], आकाशनिलय[14], स्थण्डिलशायी[15], ऊर्ध्ववासी[16], दान्त[17], आर्द्रपटवासा[18], सजप[19], तपोनिष्ठ[20] और पञ्चाग्निसेवी[21]–इन सभी श्रेणियों के तपस्वी मुनि थे।।2–5।।

उक्त सभी मुनियों ने राम से प्रार्थना की –

'इन भयानक कर्म करने वाले राक्षसों ने इस वन में तपस्वी मुनियों का जो ऐसा भयंकर विनाशकाण्ड मचा रखा है, वह हम लोगों से सहा नहीं जाता है।।18।। 'अतः इन राक्षसों से बचने के लिये शरण लेने के उद्देश्य से हम आपके पास आये हैं। श्रीराम! आप शरणागतवत्सल हैं, अतः इन निशाचरों से मारे जाते हुए हम मुनियों की रक्षा कीजिये।।19।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग–7**

**तपस्विनां रणे शत्रुन् हन्तुमिच्छामि राक्षसान्।**
**पश्यन्तु वीर्यमृषयः सभ्रातुर्मे तपोधनाः।।25।।**

'तपोधनो! मैं तपस्वी मुनियों से शत्रुता रखने वाले उन राक्षसों का युद्ध में संहार करना चाहता हूँ। आप सब महर्षि भाई सहित मेरा पराक्रम देखें।।25।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड सर्ग–1**

राम के राज्य अभिषेक के समय अगस्त्य मुनि ने बताया –

**दिष्ट्या प्रहस्तो विकटो विरूपाक्षो महोदरः।**
**अकम्पनश्च दुर्धर्षो निहतास्ते निशाचराः।।21।।**
**यस्य प्रमाणाद् विपुलं प्रमाणं नेह विद्यते।**
**दिष्ट्या ते समरे राम कुम्भकर्णो निपातितः।।22।।**
**त्रिशिराश्चातिकायश्च देवान्तकनरान्तकौ।**
**दिष्ट्या ते निहता राम महावीर्या निशाचराः।।23।।**
**कुम्भश्चैव निकुम्भश्च राक्षसौ भीमदर्शनौ।**
**दिष्ट्या तौ निहतौ राम कुम्भकर्णसुतौ मृधे।।24।।**
**युद्धोन्मत्तश्च मत्तश्च कालान्तकयमोपमौ।**
**यज्ञकोपश्च बलवान् धूमाक्षो नाम राक्षसः।।25।।**
**कुर्वन्तः कदनं घोरमेते शस्त्रास्त्रपारगाः।**
**अन्तकप्रतिमैर्बाणैर्दिष्ट्या विनिहतास्त्वया।।26।।**

'प्रहस्त, विकट, निरूपाक्ष, महोदर तथा दुर्धर्ष अकम्पन–जैसे निशाचर, आप लोगों के हाथ से मारे गये, यह बड़े आनन्द की बात है।।21।। 'श्रीराम! शरीर की ऊँचाई और स्थूलता में जिससे बढ़कर दूसराकोई है ही नहीं, उस कुम्भकर्म को भी आपने समराङ्गण में मार गिराया, यह हमारे लिये परम सौभाग्य की बात है।।22।। 'श्रीराम! त्रिशिरा, अतिकाय, देवान्तक तथा नरान्तक–ये महापराक्रमी निशाचर भी हमारे सौभाग्य से ही आपके हाथों मारे गये।।23।। 'रघुवीर! जो देखने में भी बड़े भयंकर थे, वे कुम्भकर्ण के दोनों पुत्र कम्भ और नितुम्भ नामक राक्षस भी भाग्यवश युद्ध में मारे गये।।24।। 'प्रलयकाल के संहारकारी यमराज की भाँति भयानक युद्धोन्मत्त और मत्त भी काल के गाल में चले गये। बलवान् यज्ञकोप और धूम्राक्ष नामक राक्षस भी यमलोक के अतिथि हो गये।।25।। 'ये समस्त निशाचर अस्त्र–शस्त्रों के पारंगत विद्वान् थे। इन्होंने जगत् में भयंकर संहार मचा रखा था; परंतु आपने अन्तकतुल्य बाणों द्वारा इन सबको मौत के घाट उतार दिया; यह कितने हर्ष

की बात है।।26।। फिर राम सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम पर सीता, लक्ष्मण के साथ गये और निवास के लिए उपयुक्त स्थान बतलाने का निवेदन किया। सुतीक्ष्ण मुनि ने उनके आश्रम में ही ठहरने की कही। सायंकाल की संध्योपासना करके श्रीराम ने सीता और लक्ष्मण के साथ सुतीक्ष्ण मुनि के उस रमणीय आश्रम में निवास किया।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग–9**

**सुतीक्ष्णेनाभ्यनुज्ञातं प्रस्थितं रघुनन्दनम्।**
**हृद्यया स्निग्धया वाचा भर्तारमिदमब्रवीत्।।1।।**
**अधर्मं तु सुसूक्ष्मेण विधिना प्राप्यते महान्।**
**निव–त्तेन च शक्योऽयं व्यसनात् कामजादिह।।2।।**
**त्रीण्येव व्यसनान्यत्र कामजानि भवन्त्युत।**
**मिथ्यावाक्यं तु परम् तस्माद् गुरुतरावुभौ।।3।।**
**परदाराभिगमनं विना वैरं च रौद्रता।**
**मिथ्यावाक्यं न ते भूतं न भविष्यति राघव।।4।।**
**तृतीयं यदिदं रौद्रं परप्राणाभिहिंसनम्।**
**निर्वैरं क्रियते मोहात् तच्च ते समुपस्थितम्।।9।।**
**स्नेहाच्च बहुमानाच्च स्मारये त्वां तु शिक्षये।**
**न कथंचन सा कार्या गृहीतधनुषा त्वया।।24।।**
**बुद्धिर्वैरं विना हन्तुं राक्षसान् दण्डकाश्रितान्।**
**अपराधं विना हन्तुं लोको वीर न मंस्यते।।25।।**

सुतीक्ष्ण की आज्ञा लेकर वन की ओर प्रस्थित हुए अपनेस्वामी रघुकुलनन्दन श्रीराम से सीता ने स्नेहभरी मनोहर वाणी में इस प्रकार कहा–।।1।। 'आर्यपुत्र! यद्यपि आप महान् पुरुष हैं तथापि अत्यन्त सूक्ष्म विधि से विचार करने पर आप अधर्म को प्राप्त हो रहे हैं। जब कामजनित व्यसन से आप सर्वथा निवृत्त हैं, तब यहाँ इस अधर्म से भी बच सकते हैं।।2।। 'इस जगत् में काम से उत्पन्न होने वाले तीन ही व्यसन होते हैं। मिथ्याभाषण बहुत बड़ा व्यसन है, किंतु उससे भी भारी दो व्यसन ओर हैं–परस्त्रीगमन और बिना वैर के ही दूसरों के प्रति क्रूरतापूर्ण बर्ताव। रघुनन्दन! इनमें से मिथ्याभाषण रूप व्यसन तो न आप में कभी

हुआ है और न आगे होगा ही।।3-4।। 'परंतु दूसरों के प्राणों की हिंसा रूप जो यह तीसरा भयंकर दोष है, उसे लोग मोहवश बिना वैर-विरोध के भी किया करते हैं। वही दोष आपके सामने भी उपस्थित है।।9।। 'मेरे मन में आपके प्रति जो स्नेह और विशेष आदर है, उसकेकारण मैं आपको उस प्राचीन घटना की याद दिलाती हूँ तथा यह शिक्षा भी देती हूँ कि आपको धनुष लेकर किसी तरह बिना वैर के दण्डकारण्यवासी राक्षसों के वध का विचार नहीं करना चाहिये। वीरवर! बिना अपराध के ही किसी को मारना संसार के लोग अच्छा नहीं समझेंगे।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग-10**

**ते चार्चा दण्डकारण्ये मुनयः संशितव्रताः।**
**मां सीते स्वयमागम्य शरम्यं शरणं गताः।।4।।**
**मया चैतद्वचः श्रुत्वा कात्स्न्यैन परिपालनम्।।16।।**
**ऋषीणां दण्डकारण्ये संश्रुतं जनकात्मजे।**
**संश्रुत्य च न शक्ष्यामि जीवमानः प्रतिश्रवम्।।17।।**
**मुनीनामन्यथा कर्तुं सत्यमिष्टं हि मे सदा।**
**अप्यहं जीवितं जह्यां त्वां वा सीते सलक्ष्मणाम्।।18।।**
**न तु प्रतिज्ञा संश्रुत्य ब्राह्मणोभ्यो विशेषतः।**

'सीते! दण्डकारण्य में रहकर कठोर व्रत का पालन करने वाले वे मुनि बहुत दुःखी हैं, इसीलिये मुझे शरणागतवत्सल जानकर वे स्वयं मेरे पास आये और शरणागत हुए।।4।। 'जनकनन्दिनि! दण्डकारण्य में ऋषियों की यह बात सुनकर मैंने पूर्ण रूप से उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की है।।16½।। 'मुनियों के सामने यह प्रतिज्ञा करके अब मैं जीते-जी इस प्रतिज्ञा को मिथ्या नहीं कर सकूँगा; क्योंकि सत्य का पालन मुझे सदा ही प्रिय है।।17½।। **'सीते! मैं अपने प्राण छोड़ सकता हूँ, तुम्हारा और लक्ष्मण का भी परित्याग कर सकता हूँ, किंतु अपनी प्रतिज्ञा को, विशेषतः ब्राह्मणों के लिये की गयी प्रतिज्ञा को मैं कदापि नहीं तोड़ सकता।।18½।।**

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग-11**

**जगाम चाश्रमांस्तेषां पर्यायेण तपस्विनाम्।।23।।**
**येषामुषितवान् पूर्वं सकाशे स महास्त्रवित्।**

**क्वचित् परिदशान् मासानेकसंवत्सरं क्वचित्।।24।।**
**क्वचिच्च चतुरो मासान् पञ्च षट् च परान् क्वचित्।**
**अपरत्राधिकान् मासानध्यर्धमधिकं क्वचित्।।25।।**
**त्रीन् मासानष्टमासांश्च राघवो न्यवसत् सुखम्।**
**तत्र संवसतस्तस्य मुनीनामाश्रमेषु वै।।26।।**
**रमताश्चानुकूल्येन ययुः संवत्सरा दश।**
**निगृह्य तरसा मृत्युं लोकानां हितकाम्यया।**
**यस्य भ्रात्रा कृतेयं दिक्शरम्या पुण्यकर्मणा।।54।।**

तदनन्तर महान् अस्त्रों के ज्ञाता श्रीरामचन्द्रजी बारी-बारी से उन सभी तपस्वी मुनियों के आश्रमों पर गये, जिनके यहाँ वे पहले रह चुके थे। उनके पास भी (उनकी भक्ति देख) दुबारा जाकर रहे।।23½।। कहीं दस महीने, कहीं साल भर, कहीं चार महीने, कहीं पाँच या छः महीने, कहीं इससे भी अधिक समय (अर्थात् सात महीने), कहीं उससे भी अधिक (आठ महीने), कहीं आधे मास अधिक अर्थात् साढ़े आठ महीने, कहीं तीन महीने और कहीं आठ और तीन अर्थात् ग्यारह महीने तक श्रीरामचन्द्रजी ने सुखपूर्वक आश्रमों में निवास किया।।24-25½।। इस प्रकार मुनियों के आश्रमों पर रहते और अनुकूलता पाकर आनन्द का अनुभव करते हुए उनके दस वर्ष बीत गये।।26½।। कुछ ओर काल सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम पर गुजारने के बाद अगस्त्य मुनि के आश्रम के लिए रवाना हुए। रास्ते में अगस्त्य मुनि के भाई का आश्रम देखा। 'इन्हीं के भाई पुण्यकर्मा अगस्त्यजी ने समस्त लोकों के हित की कामना से मृत्युस्वरूप वातापि और इल्वल का वेगपूर्वक दमन करके इस दक्षिण दिशा को शरण लेने के योग्य बना दिया।।54।। राम फिर अगस्त्य मुनि के आश्रम पर पहुँचे। अगस्त्यजी ने पहले अग्नि में आहुति दी, फिर वानप्रस्थधर्म के अनुसार अर्घ्य दे अतिथियों का भलीभाँति पूजन करके उनके लिये भोजन दिया।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग-13**

कुछ दिन रूकने के बाद राम ने मुनि अगस्त्य से कहा -

**किं तु व्यादिश मे देशं सोदकं बहुकानन्।**
**यत्राश्रमपदं कृत्वा वसेयं निरतः सुखम्।।11।।**
**स देशः श्लाघनीयश्च नातिदूरे च राघव।**
**गोदावर्याः समीपे च मैथिली तत्र रंस्यते।।18।।**

'परंतु मुने! अब आप मुझे ऐसा कोई स्थान बताइये जहाँ बहुत-से वन हों, जल की भी सुविधा हो तथा जहाँ आश्रम बनाकर मैं सुखपूर्वक सानन्द निवास कर सकूँ'।।11।। अगस्त्य मुनि ने कहा कि इस आश्रम से दो योजन की दूरी पर पंचवटी नामक सुन्दर स्थान है वहाँ जाकर निवास करना उपयुक्त रहेगा। 'रघुनन्दन! वह स्पृहणीय स्थान यहाँ से अधिक दूर नहीं है। गोदावरी के पास (उसी के तट पर) है, अतः मैथिली का मन वहाँ खूब लगेगा।।18।।

राम, सीता एवं लक्ष्मण एक साथ पंचवटी पर पहुँचे।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग-15**

राम ने लक्ष्मण से आश्रम व कुटि बनाने को कहा-

**अचिरेणाश्रमं भ्रातुश्चकार सुमहाबलः।।20।।**

श्रीराम के ऐसा कहने पर शत्रुवीरों का संहार करने वाले महाबली लक्ष्मण ने भाई के लिये शीघ्र ही आश्रम बनाकर तैयार किया।।20।। राम ने अनुष्ठान कर आश्रम में निर्मित पर्णकुटी में प्रवेश किया एवं निवास करना प्रारम्भ कर दिया।

वनवास के दौरान एक दिन लंका के राजा रावण की बहिन शूर्पणखा राम की कुटि पर आई तथा राम से विवाह का प्रस्ताव रखा। राम ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि वे शादीशुदा हैं, लक्ष्मण से चाहो तो शादी कर सकती हो। लेकिन लक्ष्मण ने भी शूर्पणखा से शादी करने से मना कर दिया। इस बात पर विवाद बढ़ गया और लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक-कान काट दिए। शूर्पणखा ने राजा रावण से शिकायत की। रावण ने सीता का अपहरण कर लिया।

राम व लक्ष्मण सीता का पता लगाने हेतु घूम रहे थे; क्योंकि सीता का अपहरण रावण ने कर लिया था। सुग्रीव ने वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु हनुमान को भेजा। परिचय करने के बाद राम-लक्ष्मण दोनों को पर्वत पर हनुमान ले आया। सुग्रीव ने राम को अपनी व्यथा सुनाई। राम ने भी अपनी कठिनाई से सुग्रीव को अवगत कराया और राम ने कहा कि वह बाली को परास्त कर किष्किन्धा का राज्य उसे (सुग्रीव को) दिलाने में मदद करेंगे और इसके बदले में सुग्रीव सीता का पता लगाने व सीता को ढूँढकर लाने में भी राम की मदद करेंगे।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण किष्किन्धाकाण्ड सर्ग-1 से 16**

# बालीवध

बाली किष्किन्धा का राजा था। वानर जाति से था, सुग्रीव बाली का छोटा भाई था। बाली का मायावी नामक राक्षस से युद्ध हुआ। वह मायावी राक्षस भागकर गुफा में छिप

गया। बाली ने गुफा में प्रवेश करने से पूर्व सुग्रीव को कहा कि यदि मायावी राक्षस से युद्ध में वह मारा जाता है तो गुफा के पास से चले जाना। मायावी राक्षस व बाली के बीच द्वंद्व युद्ध चला। गुफा के द्वार से बाहर खून निकलने लगा। सुग्रीव ने बिना पता लगाये गुफा के द्वार पर बहुत बड़ा पत्थर लगा, गुफा को अच्छी तरह बन्द कर दिया ताकि गुफा से आसानी से बाहर नहीं निकला जा सके और किष्किन्धा चला आया। बाली के मारे जाने की सूचना दे दी एवं राजसिंहासन पर कब्जा कर लिया। बाली की पत्नी तारा को भी अपनी पत्नी बना लिया। बाली मायावी राक्षस को मार कर जैसे-तैसे गुफा से बाहर निकलकर किष्किन्धा पहुँचा तो सुग्रीव को राजसिंहासन पर बैठे देखा और तारा को भी सुग्रीव की पत्नी के रूप में देखा। बाली ने क्रोधित होकर सुग्रीव को राज्य के बाहर निकाल दिया। सुग्रीव ने हनुमान के साथ निर्जन पर्वत पर शरण ली।

उक्त समझौते के तहत राम, लक्ष्मण सुग्रीव को किष्किन्धा ले गये। बाली व सुग्रीव के बीच द्वंद्व युद्ध हुआ। बाली सुग्रीव से परास्त नहीं हुआ तो राम ने पेड़ की आड़ से धनुष से तीर चलाया जो बाली को लगा और बाली घायल होकर नीचे गिर पड़ा। बाली ने राम से कहा -

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण किष्किन्धाकाण्ड सर्ग-17**

**स त्वां विनिहतात्मानं धर्मध्वजमदार्मिकम्।**
**जाने पापसमाचारं तृणैः कूपमिवावृतम्।।22।।**
**सतां वेषधरं पापं प्रच्छन्नमिव पावकम्।**
**नाहं त्वामभिजानामि धर्मच्छद्माभिसंवृतम्।।23।।**
**विषये वा पुरे वा ते यदा पापंम करोम्यहम्।**
**न च त्वामवजानेऽहं कस्मात् तं हंस्यकिल्बिषम्।।24।।**
**फलमूलाशनं नित्यं वानरं वनगोचरम्।**
**मामिहाप्रतियुध्यन्तमन्येन च समागमतम्।।25।।**
**वयं वनचरा राम मृगा मूलफलाशिनः।**
**एषा प्रकृतिरस्माकं पुरुषस्त्वं नरेश्वर।।30।।**
**भूमिर्हिरण्यं रूपं च विग्रहे कारणानि च।**
**तत्र कस्ते वने लोभो मदीयेषु फलेषु वा।।31।।**

**नयश्च विनयश्चोभौ निग्रहानुग्रहावपि।**
**राजवृत्तिरसंकीर्णा न नृपाः कामवृत्तयः।।32।।**
**त्वं तु कामप्रधानश्च कोपनश्चानवस्थितः।**
**राजवृत्तेषु संकीर्णः शरासनपरायणः।।33।।**
**न तेऽस्त्यपचितिर्धर्मे नार्थे बुद्धिरवस्थिता।**
**इन्द्रियैः कामवृत्तः सन् कृष्यते मनुजेश्वर।।34।।**
**हत्वा बाणेन काकुत्स्थ मामिहानपराधिनम्।**
**किं वक्ष्यसि सतां मध्ये कर्म कृत्वा जुगुप्सितम्।।35।।**
**राजहा ब्रह्महा गोघ्नश्चोरः प्राणिवधे रतः।**
**नास्तिकः परिवेत्ता च सर्वे निरयगामिनः।।36।।**

'परंतु आज मुझे मालूम हुआ कि आपकी बुद्धि मारी गयी है। आप धर्मध्वजी हैं। दिखावे के लिये धर्म का चोला पहने हुए हैं। वास्तव में अधर्मी हैं। आपका आचार-व्यवहार पापपूर्ण है। आप घास-फूस से ढके हुए कूप के समान धोखा देने वाले हैं।।22।। 'आपने साधु पुरुषों का-सा वेश धारण कर रखा है; परंतु हैं पापी। राख से ढकी हुई आग के समान आपका असली रूप साधु-वेष में छिप गया है। मैं नहीं जानता था कि आपने लोगों को छलने के लिये ही धर्म की आड़ ली है।।23।। 'जब मैं आपके राज्य या नगर में कोई उपद्रव नहीं कर रहा था तथा आपका भी तिरस्कार नहीं करता था, तब आपने मुझ निरपराध को क्यों मारा?।।24।। 'मैं सदा फल-मूल का भोजन करने वाला और वन में ही विचरने वाला वानर हूँ। मैं यहाँ आपसे युद्ध नहीं कर रहा था, दूसरे के साथ मेरी लड़ाई हो रही थी। फिर बिना अपराध के आपने मुझे क्यों मारा?।।25।। 'नरेश्वर राम! हम फल-मूल खाने वाले वनचारी हैं। यही हमारी प्रकृति है; किंतु आप तो पुरुष (मनुष्य) हैं। अतः हमारे और आप में वैर का कोई कारण नहीं है।।30।। बाली ने आगे कहा-'पृथ्वी, सोना और चाँदी- इन्हीं वस्तुओं के लिये राजाओं में परस्पर युद्ध होते हैं। ये ही तीन कलह के मूल कारण हैं। परंतु यहाँ वे भी नहीं हैं। इस दिशा में इस वन में या हमारे फलों में आपका क्या 'नीति और विनय, दण्ड और अनुग्रह-ये राजधर्म हैं, किंतु इनके उपयोग के भिन्न-भिन्न अवसर हैं (इनका अविवेकपूर्ण उपयोग करना उचित नहीं है)। राजाओं को स्वेच्छाचारी नहीं होना चाहिये।।32।। 'परंतु आप तो काम के गुलाम, क्रोधी और मर्यादाओं में स्थिर न रहने वाले-चञ्चल हैं। नय-विनय आदि जो राजाओं के धर्म हैं, उनके अवसर का विचार किये बिना ही किसी का कहीं भी प्रयोग कर देते हैं जहाँ कहीं भी बाण

चलाते-फिरते हैं।।33।। 'आपका धर्म के विषय में आदर नहीं है और न अर्थ साधन में ही आपकी बुद्धि स्थिर है। नरेश्वर! आप स्वेच्छाचारी हैं। इसलिये आपकी इन्द्रियाँ आपको कहीं भी खींच ले जाती हैं।।34।। 'काकुत्स्थ! मैं सर्वथा निरपराध था तो भी यहाँ मुझे बाण से मारने का घृणित कर्म करके सत्पुरुषों के बीच में आप क्या कहेंगे।।35।। 'राजा का वध करने वाला, ब्रह्म-हत्यारा, गोघाती, चोर, प्राणियों की हिंसा में तत्पर रहने वाला, नास्तिक और परिवेत्ता (बड़े भाई के अविवाहित रहते अपना विवाह करने वाला छोटा भाई) ये सब-के-सब नरकगामी होते हैं।।36।।

**शठो नैकृतिकः क्षुद्रो मिथ्याप्रश्रितमानसः।**
**कथं दशरथेन त्वं जातः पापो महात्मना।।43।।**
**अशुभं चाप्ययुक्तं च सतां चैव विगर्हितम्।**
**वक्ष्यसे चेदृशं कृत्वा सद्भिः सह समागतः।।45।।**
**उदासीनेषु योऽस्मासु विक्रमोऽयं प्रकाशितः।**
**अपकारिषु ते राम नैवं पश्यामि विक्रमम्।।46।।**
**दृश्यमानस्तु युध्येथा मया युधि नृपात्मज।**
**अद्य वैवस्वतं देवं पश्येस्त्वं निहतो मया।।47।।**
**त्वयादृश्येन तु रणे निहतोऽहं दुरासदः।**
**प्रसुप्तः पन्नगेनैव नरः पापवशं गतः।।48।।**
**सग्रीवप्रियकामेन यदहं निहतस्त्वया।**
**मामेव यदि पूर्वं त्वमेतदर्थमचोदयः।**
**मैथिलीमहमेकाह्ना तव चानीतवान् भवेः।।49।।**
**राक्षसं च दुरात्मानं तव भार्यापहारिणम्।**
**कम्ठे बद्ध्वा प्रदद्यां तेऽनिहतं रावणं रणे।।50।।**
**न्यस्तां सागरतोये वा पाताले वापि मैथिलीम्।**
**आनयेयं तवादेशाच्छ्वेतामश्वतरीमिव।।51।।**
**युक्तं यत्प्राप्नुयाद् राज्यं सुग्रीवः स्वर्गते मयि।**
**अयुक्तं यदधर्मेण त्वयाहं निहतो रणे।।52।।**

**काममेवंविधो लोकः कालेन विनियुज्यते।**

**क्षमं चेद्भवता प्राप्तमुत्तरं साधु चिन्त्यताम्।।53।।**

'आप शठ (छिपे रहकर दूसरों का अप्रिय करने वाले), अपकारी, क्षुद्र और झूठे ही शान्तचित्त बने रहने वाले हैं। महात्मा राजा दथरथ ने आप-जैसे पापी को कैसे उत्पन्न किया।।43।। 'ऐसा अशुभ, अनुचित और सत्पुरुषों द्वारा निन्दित कर्म करके आप श्रेष्ठ पुरुषों से मिलने पर उनके सामने क्या कहेंगे।।45।। 'श्रीराम! हम उदासीन प्राणियों पर आपने जो यह पराक्रम प्रकट किया है, ऐसा बल-पराक्रम आप अपना अपकार करने वालों पर प्रकट कर रहे हों, ऐसा मुझे नहीं दिखायी देता।।46।। 'राजकुमार! यदि आप युद्धस्थल में मेरी दृष्टि के सामने आकर मेरे साथ युद्ध करते तो आज मेरे द्वारा मारे जाकर सूर्यपुत्र यम देवता का दर्शन करते होते।।47।। 'जैसे किसी सोये हुए पुरुष को साँप आकर डँस ले और वह मर जाय उसी प्रकार रणभूमि में मुझ दुर्जय वीर को आपने छिपे रहकर मारा है तथा ऐसा करके आप पाप के भागी हुए हैं।।48।। 'जिस उद्देश्य को लेकर सुग्रीव का प्रिय करने की कामना से आपने मेरा वध किया है, उसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये यदि आपने पहले मुझसे ही कहा होता तो मैं मिथिलेशकुमारी जानकी को एक ही दिन में ढूँढकर आपके पास ला देता।।49।। 'आपकी पत्नी का अपहरण करने वाले दुरात्मा राक्षस रावण को मैं युद्ध में मारे बिना ही उसके गले में रस्सी बाँधकर पकड़ लाता और उसे आपके हवाले कर देता।।50।। 'जैसे मधुकैटभ द्वारा अपहृत हुई श्वेताश्वतरी श्रुतिका भगवान् हयग्रीव ने उद्धार किया था, उसी प्रकार मैं आपके आदेश से मिथिलेशकुमारी सीता को यदि वे समुद्र के जल में या पाताल में रखी गयी होती तो भी वहाँ से ला देता।।51।। 'मेरे स्वर्गवासी हो जाने पर सुग्रीव जो यह राज्य प्राप्त करेंगे, वह तो उचित ही है। अनुचित इतना ही हुआ है कि आपने मुझे रणभूमि में अधर्मपूर्वक मारा है।।52।। 'यह जगत् कभी-न-कभी काल के अधीन होता ही है। इसका ऐसा स्वभाव ही है। अतः भले ही मेरी मृत्यु हो जाये, इसके लिये मुझे खेद नहीं है। परंतु मेरे इस तरह मारे जाने का यदि आपने उचित उत्तर ढूँढ निकाला हो तो उसे अच्छी तरह सोच-विचार कर कहिये'।।53।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण किष्किन्धाकाण्ड सर्ग-18**

**तदेतत् कारणं पश्य यदर्शं त्वं मया हतः।**

**भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्मं सनातनम्।।18।।**

**अस्य त्वं धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।**

**रुमायां वर्तसे कामात् स्नुषायां पापकर्मकृत्।।19।।**

**तद् व्यतीतस्य ते धर्मात् कामवृत्तस्य वानर।**

**भ्रातृभार्याभिमर्शेऽस्मिन् दण्डोऽयं प्रतिपादितः।।20।।**

राम ने कहा–'मैंने तुम्हें क्यों मारा हैं? उसका कारण सुनौ और समझो। तुम सनातन धर्म का त्याग करके अपने छोटे भाई की स्त्री से सहवास करते हो।।18।। 'इस महामना सुग्रीव के जीते–जी इसकी पत्नी रुमाका, जो तुम्हारी पुत्रवधू के समान है, कामवश उपभोग करते हो। अतः पापाचारी हो।।19।। 'वानर! इस तरह तुम धर्म से भ्रष्ट हो स्वेच्छाचारी हो गये हो और अपने भाई की स्त्री को गले लगाते हो। तुम्हारे इसी अपराध के कारण तुम्हें यह दण्ड दिया गया है।।20।।

वास्तव में राम द्वारा बाली को मारने का जो कारण बतलाया वह उचित नहीं कहा जा सकता। अयोध्या के राजगुरु वशिष्ट ने तो अपनी लड़की सतरूपा को पत्नी बना रखा था जिनके चरण छूने पर राम गौरवान्वित होते हैं। सुग्रीव व सुग्रीव की पत्नी से भी उक्त आक्षेप की सच्चाई का पता लगाना चाहिए था स्वयं सुग्रीव ने बाली की हत्या को अनैतिक ठहराया है।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण किष्किन्धाकाण्ड सर्ग–24**

**भ्राता कथं नाम महागुणस्य भ्रातुर्वधं राम विरोचयेत**

**राज्यस्य दुःखस्य च वीर सारं विचिन्तयन् कामपुरस्कृतोऽपि।।9।।**

**वधो हि मे मतो नासीत् स्वमाहात्म्यव्यतिक्रमात्।**

**ममासीद् बुद्धिदौरात्म्यात् प्राणहारी व्यतिक्रमः।।10।।**

**भ्रातृत्वमार्यभावश्च धर्मश्चानेन रक्षितः।**

**मया क्रोधश्च कामश्च कपित्वं च प्रदर्शितम्।।12।।**

**येनैव बाणेन हतः प्रियो मे तेनैव बाणेन हि मां जहीहि।**

**हता गमिष्यामि समापमस्यं न मां विना वीर रमेत वाली।।33।।**

सुग्रीव ने राम से कहा–'वीर रघुनन्दन! कोई कितना ही स्वार्थी क्यों न हो? यदि राज्य के सुख तथा भ्रातृ–वध से होने वाले दुःख की प्रबलता पर विचार करेगा तो वह भाई होकर अपने महान् गुणवान भाई का वध कैसे अच्छा समझेगा?।।9।। 'बाली के मन में मेरे वध का विचार नहीं था; क्योंकि इससे उन्हें अपनी मान–प्रतिष्ठा में बट्टा लगने का डर था। मेरी ही बुद्धि में दुष्टता भरी थी, जिसके कारण मैंने अपने भाई के प्रति ऐसा अपराध कर

डाला, जो उनके लिये घातक सिद्ध हुआ।।10।। 'उन्होंने भ्रातृभाव, आर्यभाव और धर्म की भी रक्षा की है; परंतु मैंने केवल काम, क्रोध और वानरोचित चपलता का ही परिचय दिया है।।12।। उस समय घोर संकट में पड़ी हुई शोक पीड़ित भार्या तारा अत्यन्त विह्वल हो गिरती-पड़ती तीव्र गति से श्रीराम के समीप गयी। राम से कहा-आपने जिस बाण से मेरे प्रियतम पति का वध किया है, उसी बाण से आप मुझे भी मार डालिये। मैं मरकर उनके समीप चली जाऊँगी। वीरह्न मेरे बिना बाली कहीं भी सुखी नहीं रह सकेंगे।।33।।

राम द्वारा धोखे से बाली की की गई हत्या न केवल घोर अमानवीय, अनैतिक व पाप है बल्कि राम के ईश्वर होने के तथ्य पर भी प्रश्न चिन्ह लगाती है।

# राम की बदनसीब पत्नी सीता

जब राम वनवास की तैयारी कर रहे थे तो उन्होंने सीता को वन में साथ नहीं जाने की सलाह दी थी जिस पर सीता ने कहा-

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग-27**

**किमिदं भाषसे राम वाक्यं लघुतया ध्रवम्।**
**त्वया यदपहास्यं मे श्रुत्वा नरवरोत्तम।।2।।**
**वीराणां राजपुत्राणां शस्त्रास्त्रविदुषां नृप।**
**अनर्हमयशस्यं च न श्रोतव्यं त्वयेरितम्।।3।।**
**भर्तुर्भाग्यं तु नार्येका प्राप्नोति पुरुषर्षभ।**
**अतश्चैवाहमादिष्टा वने वस्तव्यमित्यपि।।5।।**
**न पिता नात्मजो वात्मा न माता न सखीजनः।**
**इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गतिः सदा।।6।।**
**यदि त्वं प्रस्थितो दुर्गं वनमद्यैव राघव।**
**अग्रतस्ते गमिष्यामि मृद्नन्ती कुशकण्टकान्।।7।।**
**स्वर्गेऽपि च विना वासो भविता यदि राघव।**
**त्वया विना नरव्याघ्र नाहं तदपि रोचये।।21।।**
**पतिहीना तु या नारी न सा शक्ष्यति जीवितुम्।**
**काममेवंविधं राम त्वया मम निदर्शितम्।।27।।**

'नरश्रेष्ठ श्रीराम! आप मुझे ओछी समझकर यह क्या कह रहे हैं? आपकी ये बातें सुनकर मुझे बहुत हँसी आती है।।2।। 'नरेश्वर! आपने जो कुछ कहा है, वह अस्त्र-शास्त्रों के ज्ञाता वीर राजकुमारों के योग्य नहीं है। वह अपयश का टीका लगाने वाला होने के कारण सुनने योग्य भी नहीं है।।3।। 'पुरुषप्रवर! केवल पत्नी ही अपने पति के भाग्य का अनुसरण करती है, अतः आपके साथ ही मुझे भी वन में रहने की आज्ञा मिल गयी है।।5।। 'नारियों के लिये इस लोक और परलोक में एकमात्र पति ही सदा आश्रय देने वाला है। पिता, पुत्र, माता, सखियों तथा अपना यह शरीर भी उसका सच्चा सहायक नहीं है।।6।। 'रघुनन्दन! यदि आप आज ही दुर्गम वन की ओर प्रस्थान कर रहे हैं तो मैं रास्ते के कुश और काँटों को कुचलती हुई आपके आगे-आगे चलूँगी।।7।। 'पुरुषसिंह रघुनन्दन! आपके बिना यदि मुझे स्वर्गलोक का निवास भी मिल रहा हो तो वह मेरे लिये रुचिकर नहीं हो सकता-मैं उसे लेना नहीं चाहूँगी।।21।। 'श्रीराम! पतिव्रता स्त्री अपने पति से वियोग होने पर जीवित नहीं रह सकेगी; ऐसी बात आपने भी मुझे भलीभाँति दर्शायी है।।27।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग-29**

**यदि मां दुःखितामेवं वनं नेतुं न चेच्छसि।**
**विषमग्निं जलं वाहमास्थास्ये मृत्युकारमात्।।21।।**

'यदि आप इस प्रकार दुःख में पड़ी हुई मुझ सेविका को अपने साथ वन में ले जाना नहीं चाहते हैं तो मैं मृत्यु के लिये विष खा लूँगी, आग में कूद पड़ूँगी अथवा जल में डूब जाऊँगी'।।21।।

राजा दशरथ, कौसल्या व सुमित्रा ने भी सीता को वन में नहीं जाने की सलाह दी थी लेकिन सीता नहीं मानी और राम के साथ वन में प्रस्थान किया और एक सदाचारी एवं समर्पित पत्नी की तरह हर कष्ट में राम के साथ रहीं। पंचवटी में रावण की बहिन सूर्पणखा के लक्ष्मण द्वारा नाक-कान काट दिये जाने पर प्रतिशोध में रावण सीता का अपहरण कर लंका में ले गया। सीता को पटरानी बनने के लिए कई प्रलोभन दिए, दबाव बनाया लेकिन सीता ने कहा-

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण सुंदरकाण्ड सर्ग-18**

**नापहर्तुमहं शक्या तस्य रामस्य धीमतः।**
**विधिस्तव वधार्थाय विहितो नात्र संशयः।।21।।**
**अनयेनाभिसम्पन्नमर्थहीनमनुव्रते ।**
**नाशयाम्यहमद्य त्वां सूर्यः संध्यामिलौजसा।।31।।**

सीता ने कहा–'मैं मतिमान् श्रीराम की भार्या हूँ, मुझे हर ले आने की शक्ति तेरे अंदर नहीं थी। निःसंदेह तेरे वध के लिये ही विधाता ने यह विधान रच दिया है।।21।। रावण ने कहा–'अन्यायी और निर्धन मनुष्य का अनुसरण करने वाली नारी! जैसे सूर्यदेव अपने तेज से प्रातःकालिक संध्या के अन्धकार को नष्ट कर देते हैं, उसी प्रकार आज मैं तेरा विनाश किये देता हूँ'।।31।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण सुंदरकाण्ड सर्ग–19**

**पतिशोकातुरां शुष्कां नदीं विस्राविताामिव।**
**परया मृजया हीनां कृष्णपक्षे निशामिव।।16।।**
**उपवासेन शोकेन ध्यानेन च भयेन च।**
**परिक्षीणां कृशां दीनामल्पाहारां तपोधनाम्।।20।।**
**निक्षिप्तविजयो रामो गतश्रीर्वनगोचरः।**
**व्रती स्थण्डिलशायी च शंके जीवति वा न वा।।26।।**

पति के विरह–शोक से सीता का हृदय बड़ा व्याकुल था। जिसका जल नहरों के द्वारा इधर–उधर निकाल दिया गया हो, ऐसी नदी के समान वे सूख गयी थीं तथा उत्तम उबटन आदि न लगने से कृष्णपक्ष की रात्रि के समान मलिन हो रही थीं।।16।। वे उपवास, शोक, चिन्ता और भय से अत्यन्त क्षीण, कृशकाय और दीन हो गयी थीं। उनका आहार बहुत कम हो गया था तथा एकमात्र तप ही उनका धन था।।20।।

**रावण ने कहा–**

'राम ने विजय की आशा त्याग दी है। वे श्रीहीन होकर वन–वन में विचर रहे हैं, व्रत का पालन करते हैं और मिट्टी की वेदी पर सोते हैं। अब तो मुझे यह भी संदेह होने लगा है कि वे जीवित भी हैं या नहीं।।26।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण सुंदरकाण्ड सर्ग–20**

**व मैथिलि भार्या मे मोहमेतं विसर्जय।**
**ह्रीनामुत्तमस्त्रीणां ममाग्रमहिषी भव।।16।।**
**अन्तःपुरनिवासिन्यः स्त्रियः सर्वगुणान्विताः।**
**यावत्यो मम सर्वासामैश्वर्यं कुरु जानकि।।31।।**

**मम ह्यसितकेसान्ते त्रैलोक्यप्रवरस्त्रियः।**
**तास्त्वां परिचरिष्यन्ति श्रियमप्सरसो यथा।।32।।**
**यानि वैश्रवणे सुभ्रु रत्नानि च धनानि च।**
**तानि लोकांश्च सुश्रोणि मया भुङ्क्ष्व यथासुखम्।।33।।**
**न रामस्तपसा देवि न बलेन च विक्रमैः।**
**न धनेन मया तुल्यस्तेजसा यशसापि वा।।34।।**

रावण ने कहा–'मिथिलेशकुमारी! तुम मेरी भार्या बन जाओ। पतिव्रत्य के इस मोह को छोड़ो। 'जनकनन्दिनि! मेरे अन्तःपुर में निवास करने वाली जितनी भी सर्वगुण सम्पन्न रानियाँ हैं, उन सबकी तुम स्वामिनी बन जाओ।।31।। 'काले केशों वाली सुन्दरी! जैसे अप्सराएँ लक्ष्मी की सेवा करती हैं, उसी प्रकार त्रिभुवन की श्रेष्ठ सुन्दरियाँ यहाँ तुम्हारी परिचर्या करेंगी।।32।। 'सुभ्रु! सुश्रोणि! कुबेर के यहाँ जितने भी अच्छे रत्न और धन हैं, उन सबका तथा सम्पूर्ण लोकों का तुम मेरे साथ सुखपूर्वक उपभोग करो।।33।। 'देवि! राम तो न तप से, न बल से, न पराक्रम से, न धन से और न तेज अथवा यश के द्वारा ही मेरी समानता कर सकते हैं।।34।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण सुंदरकाण्ड सर्ग–21**

**तस्य तद् वचनं श्रुत्वा सीता रौद्रस्य रक्षसः।**
**आर्ता दीनस्वरा दीनं प्रत्युवाच ततः शनैः।।1।।**
**दुःखार्ता रुदती सीता वेपमाना तपस्विनी।**
**चिन्तयन्ती वरारोहा पतिमेव पतिव्रता।।2।।**
**तृणमन्तरतः कृत्वा प्रत्युवाच शुचिस्मिता।**
**निवर्तय मनो मत्तः स्वजने प्रीयतां मनः।।3।।**
**न मां प्रार्थयितुं युक्तस्त्वं सिद्धिमिव पापकृत्।**
**अकार्यं न मया कार्यमेकपत्न्या विगर्हितम्।।4।।**
**कुलं सम्प्राप्तया पुण्यं कुले महति जातया।**
**एवमुक्ता तु वैदेही रावणं तं यशस्विनी।।5।।**
**रावणं पृष्ठतः कृत्वा भूयो वचनमब्रवीत्।**
**नाहमौपयिकी भार्या परभार्या सती तव।।6।।**

उस भयंकर राक्षस की वह बात सुनकर सीता को बड़ी पीड़ा हुई। उन्होंने दीन वीणा में बड़े दुःख के साथ धीरे-धीरे उत्तर देना आरम्भ किया।।1।। उस समय सुन्दर अंगों वाली पतिव्रता देवी तपस्विनी सीता दुःख से आतुर होकर रोती हुई काँप रही थीं और अपने पतिदेव का ही चिन्तन कर रही थीं।।2।। पवित्र मुसकान वाली विदेहनन्दिनी ने तिनके की ओट करके रावण को इस प्रकार उत्तर दिया-'तुम मेरी ओर से अपना मन हटा लो और आत्मीय जनों (अपनी ही पत्नियों) पर प्रेम करो।।3।। 'जैसे पापाचारी पुरुष सिद्धि की इच्छा नहीं कर सकता, उसी प्रकार तुम मेरी इच्छा करने के योग्य नहीं हो। जो पतिव्रता के लिये निन्दित है, वह न करने योग्य कार्य मैं कदापि नहीं कर सकती।।4।। क्योंकि मैं एक महान् कुल में उत्पन्न हुई हूँ और ब्याह करके एक पवित्र कुल में आयी हूँ।' रावण से ऐसा कहकर यशस्विनी विदेहराजकुमारी ने उसकी ओर अपनी पीठ फेर ली और इस प्रकार कहा-'रावण! मैं सती और परायी स्त्री हूँ। तुम्हारी भार्या बनने योग्य नहीं हूँ।।5-6।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण सुंदरकाण्ड सर्ग-22 एवं 23**

**द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्तारं माममनिच्छतीम्।**
**मम त्वां प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यन्ति खण्डशः।।7।।**
**न मानुषी राक्षसस्य भार्या भवितुमर्हति।**
**काम खादत मां सर्वा न करिष्यामि वो वचः।।8।।**
**दीनो वा राज्यहीनो वा यो मे भर्ता स मे गुरुः।**
**तं नित्यमनुरक्तास्मि यथा सूर्यं सुवर्चला।।9।।**

रावण ने कहा-याद रखो-यदि दो महिने के बाद तुम मुझे अपना पति बनाना स्वीकार नहीं करोगी तो रसोइये मेरे कलेवे के लिये तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे'।।7।। सीता ने कहा-'एक मानव कन्या किसी राक्षस की भार्या नहीं हो सकती। तुम सब लोग भले ही मुझे खा जाओ; किंतु मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकती।।8।। 'मेरे पति दीन हों अथवा राज्यहीन-वे ही मेरे स्वामी हैं, वे ही मेरे गुरु हैं, मैं सदा उन्हीं में अनुरक्त हूँ और रहूँगी। जैसे सुवर्चला सूर्य में अनुरक्त रहती हैं।।9।। सीता को प्रलोभन दिया, डराया भी लेकिन सीता ने रावण की पत्नी बनना अस्वीकार कर दिया। उधर राम ने सुग्रीव के सहयोग से लंका पर आक्रमण कर दिया। रावण व रावण का पूरा परिवार युद्ध में नष्ट हो गया। युद्ध के बाद राम ने सीता से कहा-

**एषासि निर्जिता भद्रे शत्रुं जित्वा रणाजिरे।**
**पौरुषाद् यदनुष्ठेयं मयैतदुपपादितम्।।2।।**
**यत् कर्तव्यं मनुष्येण धर्षणां प्रतिमार्जता।**
**तत् कृतं रावणं हत्वा मयेदं मानकांक्षिणा।।13।।**
**विदितश्चास्तु भद्रं तो योऽयं रणपरिश्रमः।**
**सुतीर्णः सुहृदां वीर्यान्न त्वदर्थं मया कृतः।।15।।**
**प्राप्तचारित्रसंदेहा मम प्रतिमुखे स्थिता।**
**दीपो नेत्रातुरस्येव प्रतिकूलासि मे दृढ़ा।।17।।**
**तद् गच्छ त्वानुजानेऽद्य यतेष्टं जनकात्मजे।**
**एता दश दिशो भद्रे कार्यमस्ति न मे त्वया।।18।।**
**शत्रुघ्ने वाथ सुग्रीवे राक्षसे वा विभीषणे।**
**निवेशय मनः सीते यथा वा सुखमात्मना।।23।।**
**नहि त्वां रावणो दृष्ट्वा दिव्यरूपां मनोरमाम्।**
**मर्षयेत चिरं सीते स्वगृहे पर्यवस्थिताम्।।24।।**
**ततः प्रियार्हश्रवणा तदप्रियं प्रियादुपश्रुत्य चिरस्य मानिनी।**
**मुमोच बाष्पं रुदती तदा भृशं गजेन्द्रहस्ताभिहतेव वल्लरी।।25।।**

'भद्रे! समराङ्गण में शत्रु को पराजित करके मैंने तुम्हें उसके चंगुल से छुड़ा लिया। पुरुषार्थ द्वारा जो कुछ किया जा सकता था, वह सब मैंने किया।।2।। अपने तिरस्कार का बदला चुकाने के लिये मनुष्य का जो कर्तव्य है, वह सब मैंने अपनी मानरक्षा की अभिलाषा रावण का वध करके पूर्ण की।।13।। 'तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मैंने जो यह युद्ध का परिश्रम उठाया है तथा इन मित्रों के पराक्रम से जो इसमें विजय पायी है, यह सब तुम्हें पाने के लिये नहीं किया गया है।।15।। 'तुम्हारे चरित्र में संदेह का अवसर उपस्थित है; फिर भी तुम मेरेसामने खड़ी हो। जैसे आँख के रोगी को दीपक की ज्योति नहीं सुहाती, उसी प्रकार आज तुम मुझे अत्यन्त अप्रिय जान पड़ती हो।।17।। 'अतः जनककुमारी! तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, चली जाओ। मैं अपनी ओर से तुम्हें अनुमति देता हूँ। भद्रे! ये दसों

दिशाएँ तुम्हारे लिये खुली हैं। अब तुमसे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है।।18।। 'सीते! तुम्हारी इच्छा हो तो तुम शत्रुघ्न, वानरराज सुग्रीव अथवा राक्षसराज विभीषण के पास भी रह सकती हो। जहाँ तुम्हें सुख मिले, वहीं अपना मन लगाओ।।23।। 'सीते! तुम-जैसी दिव्यरूप-सौन्दर्य से सुशोभित मनोरम नारी को अपने घर में स्थित देखकर रावण चिरकाल तक तुमसे दूर रहने का कष्ट नहीं सह सका होगा'।।24।।

जो सदा प्रिय वचन सुनने के योग्य थीं, वे मानिनी सीता चिरकाल के बाद मिले हुए प्रियतम के मुख से ऐसी अप्रिय बात सुनकर उस समय हाथी की सूँड से आहत हुई लता के समान आँसू बहाने और रोने लगीं और कहा-

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण युद्धकाण्ड सर्ग-116**

**प्रेषितस्ते महावीरो हनुमानवलोककः।**
**लङ्कास्थाहं त्वया राजन् किं तदा न विसर्जिता।।11।।**
**प्रत्यक्षं वानरस्यास्य तद्वाक्यसमनन्तरम्।**
**त्वया संत्यक्तया वीर त्यक्तं स्याज्जीवितं मया।।12।।**
**चितां मे कुरु सौमित्रे व्यसनस्यास्य भेषजम्।**
**मिथ्यापवादोपहता नाहं जीवितुमुत्सहे।।18।।**
**स विज्ञाय मनश्छन्दं रामस्याकारसूचितम्।**
**चितां चकार सौमित्रिर्मते रामस्य वीर्यवान्।।21।।**
**आर्त्तियो भगवान् वायुर्दिशश्चन्द्रस्तथैव च।**
**सहश्चापि तथा संध्ये रात्रिश्च पृथिवी तथा।**
**यथान्येऽपि विजानन्ति तथा चारित्रसंयुताम्।।28।।**
**एवमुक्त्वा तु वैदेही परिक्रम्य हुताशनम्।**
**विवेश ज्वलनं दीप्तं निःशङ्केनान्तरात्मना।।29।।**

सीता ने रोते हुए राम से कहा-'महाराज! लङ्का में मुझे देखने के लिये जब आपने महावीर हनुमान को भेजा था, उसी समय मुझे क्यों नहीं त्याग दिया?।।11।। 'उस समय वानर वीर हनुमान के मुख से आपके द्वारा अपने त्याग की बात सुनकर तत्काल इनके सामने ही मैंने अपने प्राणों का परित्याग कर दिया होता।।12।। 'सुमित्रानन्दन! मेरे लिये चिता

तैयार कर दो। मेरे इस दुःख की यही दवा है। मिथ्या कलङ्क से कलङ्कित होकर में जीवित नहीं रह सकती।।18।। इस पर श्रीराम के इशारे से सूचित होने वाले उनके हार्दिक अभिप्राय को जानकर पराक्रमी लक्ष्मण ने उनकी सम्मति से ही चिता तैयार की।।21।। सीता ने कहा– 'यदि भगवान् सूर्य, वायु, दिशाएँ, चन्द्रमा, दिन, रात, दोनों संध्याएँ, पृथ्वी देवी तथा अन्य देवता भी मुझे शुद्ध चरित्र से युक्त जानते हों तो अग्निदेव मेरी सब ओर से रक्षा करें।।28।। ऐसा कहकर विदेहराजकुमारी ने अग्निदेव की परिक्रमा की और निःशङ्क चित्त से वे उस प्रज्वलित अग्नि में समा गयीं।।29।। उपस्थित जन समुदाय ने सीता को बचा लिया। अग्नि परीक्षा के बाद राम बेमन से सीता को अयोध्या ले आये।

सीता के अपहरण के लिए स्वयं राम उत्तरदायी थे। यदि वे लक्ष्मण से सुर्पणखा के नाक–कान काटने की नहीं कहते और लक्ष्मण सूर्पणखा के नाक–कान नहीं काटते तो शायद रावण सीता का अपहरण ही नहीं करता। यदि राम वास्तव में ईश्वर थे तो उन्हें मारिच के वास्तविक रूप का क्यों नहीं भान हुआ और सीता के चरित्र का क्यों कर पता नहीं चल पाया? रावण ने सीता के साथ दुराचरण किया हो ऐसा शास्त्रों में उल्लेख नहीं मिलता है। रावण ने सीता को अपनी पत्नी बनाने के लिए कई प्रलोभन दिए, तैयार नहीं होने पर धमकी भी दी, आतंकित किया लेकिन सीता के साथ दुराचरण करने का विचार तक नहीं किया। सीता रावण के पूर्ण नियंत्रण एवं आधिपत्य में थी। रावण चाहता तो सीता को अपनी काम–वासना का शिकार बना सकता था। लेकिन ऐसा करने का मन में विचार तक नहीं किया। रावण चरित्रहीन नहीं था, अच्छा शासक था। उसके शासन में लंका सोने की थी इसलिए राम का सीता के प्रति कटु व्यवहार न्यायसंगत एवं उचित नहीं लगता है।

राम का अयोध्या में राजतिलक हुआ। उसके कुछ दिन बाद ही सीता गर्भवती हो गई। दुष्ट लोगों ने यह प्रचार किया कि सीता राम के संसर्ग से गर्भवती नहीं हुई है। राम ने लोकलाज के डर से सीता को त्यागने का मानस बनाया। अपने भाइयों की असहमति के बावजूद लक्ष्मण को यह आदेश दिया कि सीता को चुपचाप जंगल में छोड़ आवे। लक्ष्मण ने दुःखी मन से सीता को सरयू पार जंगल में असहाय अवस्था में छोड़ दिया। सीता बहुत देर तक जंगल में असहाय रोती रही फिर सीता बाल्मीकि आश्रम में गई। बाल्मीकि ने सीता को अपने आश्रम में शरण दी। सीता ने लव–कुश नामक जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। राम ने उस अवधि में न तो सीता का पता लगाने का प्रयास किया और न ही सीता को याद किया। लगभग 12 वर्ष से अधिक अवधि तक सीता बाल्मीकि आश्रम में ही रही। लव–कुश ने बाल्मीकि आश्रम में सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण की। राम ने सीता को जंगल में

छोड़ने के 12 वर्ष बाद यज्ञ का आयोजन किया। बाल्मीकि लव-कुश के साथ यज्ञ में शामिल हो गये। लवकुश ने रामायण का सुन्दर गायन किया। राम द्वारा जानकारी चाहने पर बाल्मीकि ने कहा कि ये तुम्हारे पुत्र लव-कुश है।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड सर्ग-43 से 66 एवं सर्ग-91 से 102 में आये विवरण के अनुसार**

बाल्मीकि ने सीता को यज्ञ-स्थल पर सभा में प्रस्तुत करते हुए कहा-''हे दशरथ के पुत्र यह सीता खड़ी है जिसे तुमने लोगों की कानाफूसी के कारण त्याग दिया था और ये तुम्हारे पुत्र लव-कुश हैं जिन्हें मैंने अपने आश्रम में पाला है।'' राम ने कहा-''मैं जानता हूँ सीता पवित्र है और यह मेरे पुत्र हैं। इन्होंने लंका में भी अपने सतीत्व का प्रमाण दिया है। मैं इन्हें साथ ले आया, परन्तु लोगों को सन्देह है। सीता वह परीक्षा यहाँ भी दे जिसे सभी ऋषि और प्रजा भी देख ले।''

सीता ने उस भरी सभा में प्रण लिया ''यदि मैंने सपने में भी राम को छोड़कर कभी किसी व्यक्ति का विचार भी किया हो तो धरती माता तू फट जा और मुझे अपने में समाले।'' आखिरकार सीता ने राम के दुर्व्यवहार, उपेक्षा व बार-बार प्रताड़ित करने से व्यथित होकर धरती में अपने आपको समाकर अपने प्राण त्याग दिये।

मेरे मत में सीता का कोई दोष नहीं था। यदि राम और लक्ष्मण शूर्पणखा के प्रेमपूर्वक शादी के प्रस्ताव से इन्कार कर देते, उसके साथ हँसी-ठिठोली नहीं करते और लक्ष्मण गुस्से में आकर शूर्पणखा की नाक-कान नहीं काटते तो रावण कभी भी सीता का अपहरण नहीं करता। रावण द्वारा सीता का शील भंग या दुराचरण किये जाने बाबत किसी भी ग्रंथ में उल्लेख नहीं मिलता है। सीता ने लंका में ही पाक साफ होने बाबत अग्नि परीक्षा भी दे दी थी तो फिर केवल कुछ शरारती लोगों को संतुष्ट करने के लिए ही अपने भाइयों, परिवारजनों की इच्छा के विरुद्ध सीता को गर्भावस्था में ही जंगल में छोड़ दिया? 12 वर्ष तक सीता की सुध तक नहीं ली? यदि राम ईश्वर के अवतार थे तो उन्हें लोगों की अफवाहों से क्यों डर लगा? क्यों स्वविवेक का दृढ़ता से उपयोग नहीं किया? क्यों कर सीता को बार-बार सतीत्व की परीक्षा देने के लिए मजबूर किया? ये सब बातें राम के एक साधारण मानव होने के संकेत देती हैं। **वास्तव में राम एक निष्ठुर पति थे।**

राम का वैवाहिक जीवन केवल उनकी स्वयं की गलतियों के कारण सुखी नहीं रहा। लेकिन अपनी गलती का ठीकरा समस्त नारी जाति पर फोड़ दिया। उनकी नारी जाति व शूद्रों के प्रति दुर्भावना निम्न चौपाई से झलकती है -

**''ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।''**

राम का मानवता में तनिक भी विश्वास नहीं था। उस काल में भी नारी व शूद्र उनके राज्य में कुल आबादी का लगभग 80 प्रतिशत रहे होंगे। साथ ही गंवार अर्थात् अनपढ़ लोगों को और जोड़ दिया जाए तो यह संख्या 90 प्रतिशत तक भी हो सकती है। इतने बड़े विशाल जन समुदाय को जो राम जैसा राजा भगाने, प्रताड़ित करने की बात करे उसे कैसे ईश्वर माना जा सकता है? ऐसा राजा तो राजगद्दी का भी पात्र नहीं माना जा सकता।

# शूद्रऋषी शंभूक की राम ने की हत्या

राम रावण का वध कर सीता व लक्ष्मण सहित अयोध्या में आये।

**श्रीमद्बाल्मीकिय रामायण युद्धकाण्ड सर्ग–122**

**वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिरथ काश्यपः।**
**कात्यायनः सुयज्ञश्च गौतमो विजयस्तथा।।60।।**
**अभ्यषिञ्चन्नरव्याघ्रं प्रसन्नेन सुगन्धिना।**
**सलिलेन सहस्राक्षं वसवो वासवं यथा।।61।।**
**प्रजगुर्देवगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोमणाः।।71।।**
**अभिषेके तदर्हस्य तदा रामस्य धीमतः।**
**सहस्रशतश्वानां धेनूनां च गवां तथा।।73।।**
**ददौ शतवृषान् पूर्वं द्विजेभ्यो मनुजर्षभः।**
**त्रिंशत्कोटीर्हिरण्यस्य ब्राह्मणेभ्यो ददौ पुनः।।74।।**
**नानाभरणवस्त्राणि महार्हाणि च राघवः**

तत्पश्चात् जैसे आठ वसुओं ने देवराज इन्द्र का अभिषेक कराया था, उसी प्रकार वसिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप, कात्यायन, सुयज्ञ, गौतम और विजय–इन आठ मन्त्रियों ने स्वच्छ एवं सुगन्धित जल के द्वारा सीता सहित पुरुषप्रवर श्रीरामचन्द्रजी का अभिषेक कराया।।60–61।। बुद्धिमान् श्रीराम के अभिषेक काल में देव गन्धर्व गाने लगे और अप्सराएँ नृत्य करने लगीं। भगवान् श्रीराम इस सम्मान के सर्वथा योग्य थे।।71½।। महाराज श्रीराम ने उस समय पहले ब्राह्मणों को एक लाख घोड़े, उतनी ही दूध देने वाली गाएँ तथा सौ साँड़ दान किये। यही नहीं, श्रीरघुनाथजी ने तीस करोड़ अशर्फियाँ तथा नाना प्रकार के

बहुमूल्य आभूषण और वस्त्र भी ब्राह्मणों को बाँटे।73-74½।। लेकिन देव गन्धर्व एवं अप्सराएँ जो अभिषेक के समय नाच-गा रहे थे, उनको इनाम के तौर पर एक पाई भी दी हो ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड सर्ग-73**

**प्रस्ताप्य तु स शत्रुघ्नं भ्रातृभ्यां सह राघवः।**
**प्रमुमोद सुखी राज्यं धर्मेण परिपालयन्।।1।।**
**ततः कतिपयाहःसु वृद्धो जानपदो द्विजः।**
**मृतं बालमुपादाय राजद्वारमुपागमत्।।2।।**
**रुदन बहुविधा वाचः स्नेहदुःखसमन्वितः।**
**असकृत् पुत्रपुत्रेति वाक्यमेतदुवाच ह।।3।।**
**किं नु मे दुष्कृतं कर्म पुरा देहान्तरे कृतम्।**
**यदहं पुत्रमेकं तु पश्यामि निधनं गतम्।।4।।**
**अल्पैरहोभिर्निधनं गमिष्यामि न संशयः।**
**अहं च जननी चैव तव शोकेन पुत्रक।।6।।**
**रामस्य दुष्कृतं किञ्चिन्महदस्ति न संशयः।**
**यथा हि विषयस्थानां बालानां मृत्युरागतः।।10।।**
**राजदोषैर्विपद्यन्ते प्रजा ह्यविधिपालिताः।**
**असद्वृत्ते हि नृपतावकाले म्रियते जनः।।16।।**

शत्रुघ्न को मथुरा भेजकर श्रीराम भरत और लक्ष्मण दोनों भाइयों के साथ धर्मपूर्वक राज्य का पालन करते हुए बड़े सुख और आनन्द से रहने लगे।।1।। तदनन्तर कुछ दिनों के बाद उस जनपद के भीतर रहने वाला एक बूढ़ा ब्राह्मण अपने मरे हुए बालक का शव लेकर राजद्वार पर आया।।2।। वह स्नेह और दुःख से व्याकुल हो नाना प्रकार की बातें कहता हुआ रो रहा था और बार-बार 'बेटा! बेटा!' की पुकार मचाता हुआ इस प्रकार विलाप करता था-।।3।। 'हाय! मैंने पूर्व जन्म में कौन-सा ऐसा पाप किया था, जिसके कारण आज इन आँखों से मैं अपने इकलौते बेटे की मृत्यु देख रहा हूँ।।4।। 'वत्स! तेरे शोक से मैं और तेरी माता-दोनों थोड़े ही दिनों में मर जायेंगे, इसमें संशय नहीं है।।6।। 'निस्संदेह श्रीराम का ही कोई महान् दुष्कर्म है, जिससे इनके राज्य में रहने वाले बालकों की मृत्यु होने

लगी।।10।। 'राजा के दोष से जब प्रजा का विधिवत् पालन नहीं होता, तभी प्रजा वर्ग को ऐसी विपत्तियों कासामना करना पड़ता है। राजा के दुराचारी होने पर ही प्रजा की अकाल मृत्यु होती है।।6।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड सर्ग–74**

**तथा तु करुणं तस्य द्विजस्य परिदेवनम्।**
**शुश्राव राघवः सर्वं दुःखशोकसमन्वितम्।।1।।**
**स दुखेन च संतप्तो मन्त्रिणस्तानुपाह्वयत्।**
**वसिष्ठं वामदेवं च भ्रातृंश्च सह नैगमान्।।2।।**
**तथो द्विजा वसिष्ठेन सार्धमष्टौ प्रवेशिताः।**
**राजानं देवसंकाशं वर्धस्वेति तथोऽब्रुवन्।।3।।**
**अधर्मः परमो राजन् द्वापरे शूद्रजन्मनः।**
**स वै विषयपर्यन्ते तव राजन् महातपाः।।28।।**
**अद्य तप्यति दुर्बुद्धिस्तेन बालवधो ह्ययम्।**
**यो ह्यधर्ममकार्यं वा विषये पार्थिवस्य तु।।29।।**
**करोति चाश्रीमूलं तत्पुरे वा दुर्मतिर्नरः।**
**क्षिप्रं च नरकं याति स च राजा न संशयः।।30।।**

महाराज श्रीराम ने उस ब्राह्मण का इस तरह दुःख और शोक से भरा वह सारा करुण-क्रन्दन सुना।।1।। इससे वे दुःख से संतप्त हो उठे। उन्होंने अपने मन्त्रियों को बुलाया तथा वसिष्ठ और वामदेव को एवं महाजनों सहित अपने भाइयों को भी आमन्त्रित किया।।2।। तदनन्तर वसिष्ठजी के साथ आये ब्राह्मणों ने राजसभा में प्रवेश किया और उन देवतुल्य नरेश से कहा-'महाराज! आपकी जय हो'।।3।। नारद ने कहा-'राजन्! द्वापर में भी शूद्र का तप में प्रवृत्त होना महान् अधर्म माना गया है। (फिर त्रेता के लिये तो कहना ही क्या है?) महाराज! निश्चय ही आपके राज्य की किसी सीमा पर कोई खोटी बुद्धिवाला शूद्र महान् तप का आश्रय ले तपस्या कर रहा है, उसी के कारण इस बालक की मृत्यु हुई है।।28½।। 'जो कोई भी दुर्बुद्धि मानव जिस किसी भी राजा के राज्य अथवा नगर में अधर्म या न करने योग्य काम करता है, उसका यह कार्य उस राज्यके अनैश्वर्य (दरिद्रता)-का कारण बन जाता है और वह राजा शीघ्र ही नरक में पड़ता है, इसमें संशय नहीं।।29-30।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड सर्ग–75**

नारदजी के ये अमृतमय वचन सुनकर श्रीरामचन्द्रजी को अपार आनन्द हुआ और उन्होंने लक्ष्मणजी से इस प्रकार कहा–।।1।।

**गच्छ सौम्य द्विजश्रेष्ठं समाश्वासय सुव्रत।**
**बालस्य च शरीरं तत् तैलद्रोण्यां निदापय।।2।।**
**गन्धैश्च परमोगारैस्तैलैश्च सुसुगन्धिभिः।**
**यथा न क्षीयते बालस्तथा सौम्य विधीयताम्।।3।।**
**धनुर्गृहीत्वा तूणी च खड्गं च रुचिरप्रभम्।**
**निक्षिप्य नगरे चैतौ सौमित्रिभरतावुभौ।।9।।**
**अपश्यमानस्तत्रापि स्वल्पमप्यथ दुष्कृतम्।**
**पूव्रमपि दिशं सर्वामथापश्यन्नराधिपः।।11।।**
**प्रविशुद्धसमाचारामादर्शतलनिर्मलाम् ।**
**पुष्पकस्थो महाबाहुस्तदापश्यन्नराधिपः।।12।।**
**दक्षिणां दिशमाक्रामत् तथो राजर्षिनन्दनः।**
**शैवलस्योत्तरे पार्श्वे ददर्श सुमहत्सरः।।13।।**
**तस्मिन् सरसि तप्यन्तं तापसं सुमहत्तपः।**
**ददर्श राघवः श्रीमाँल्लम्बमानमधोमुखम्।।14।।**
**राघवस्तमुपागम्य तप्यन्तं तप उत्तमम्।**
**उवाच त नृपो वाक्यं धन्यस्वमसि सुव्रत।।15।।**
**कस्यां योन्यां तपोवृद्ध वर्तसे दॉडविक्रम।**
**कौतूहलात् त्वां पृच्छामि रामो दाशरथिर्ह्यहम्।।16।।**
**यमाश्रित्य तपस्तप्तं श्रोतुमिच्छामि तापस।**
**ब्राह्मणो वासि भद्रं ते क्षत्रियो वासि दुर्जयः।**
**वैश्यस्तृतीयो वार्णो वा शूद्रो वा सत्यवाग् भव।।18।।**

'सौम्य! जाओ। उत्तम व्रत का पालन करने वाले इन द्विज श्रेष्ठ को सान्त्वना दो और इनके बालक का शरीर उत्तम गन्ध एवं सुगन्ध से युक्त तेल से भरी हुई नाव में डुबोकर रखवा दो और ऐसी व्यवस्था कर दो जिससे बालक का शरीर विकृत या नष्ट न होने पाये।।2-3।। उन्होंने धनुष, बाणों से भरे हुए दो तरकस और एक चमचमाती हुई तलवार हाथ में ले ली और लक्ष्मण तथा भरत-दोनों भाइयों को नगर की रक्षा में नियुक्त करके वहाँ से प्रस्थान किया। श्रीमान् राम पहले तो इधर-उधर खोजते हुए पश्चिम दिशा की ओर गये। फिर हिमालय से घिरी हुई उत्तर दिशा में जा पहुँचे।।10।। जब उन दोनों दिशाओं में कहीं थोड़ा-सा भी दुष्कर्म नहीं दिखायी दिया, तब नरेश्वर श्रीराम ने समूची पूर्व दिशा का भी निरीक्षण किया।।11।। पुष्पक पर बैठे हुए महाबाहु राजा श्रीराम ने वहाँ भी शुद्ध सदाचार का पालन होता देखा। वह दिशा भी दर्पण के समान निर्मल दिखायी दी।।12।। तब राजर्षिनन्दन रघुनाथजी दक्षिण दिशा की और गये। वहाँ शैवल पर्वत के उत्तर भाग में उन्हें एक महान् सरोवर दिखायी दिया।।13।। उस सरोवर के तट पर एक तपस्वी बड़ी भारी तपस्या कर रहा था। वह नीचे को मुख किये लटका हुआ था। रघुकुलनन्दन श्रीराम ने उसे देखा।।14।। देखकर राजा श्रीरघुनाथजी उग्र तपस्या करते हुए उस तपस्वी के पास आये और बोले-'उत्तम व्रत का पालन करने वाले तापस! तुम धन्य हो। तपस्या में बढ़े-चढ़े सुदृढ़ पराक्रमी पुरुष! तुम किस जाति में उत्पन्न हुए हो? मैं दशरथकुमार राम तुम्हारा परिचय जानने के कौतूहल से ये बातें पूछ रहा हूँ।।15-16।। 'तापस! जिस वस्तु के लिये तुम तपस्या में लगे हुए हो, उसे मैं सुनना चाहता हूँ। इसके सिवा यह भी बताओ कि तुम ब्राह्मण हो या दुर्जय क्षत्रिय? तीसरे वर्ण के वैश्य हो अथवा शूद्र! तुम्हारा भला हो। ठीक-ठीक बताना'।।18।।

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड सर्ग-76**

**न मिथ्याहं वदे राम देवलोकजिगीषया।**
**शूद्रं मां विद्धि काकुत्स्थ शम्बूकं नाम नामतः।।3।।**
**भाषतस्तस्य शूद्रस्य खड्गं सुरुचिरप्रभम्।**
**निष्कृष्य कोशाद् विमलं शिरश्चिच्छेद राघवः।।4।।**
**सुप्रीताश्चाब्रुवन रामं देवाः सत्यपराक्रमम्।**
**सुरकार्यमिदं देव सुकृतं ते महामते।।7।।**
**गृहाण च वरं सौम्य यं त्वमिच्छस्यरिंदम।**
**स्वर्गभाङ् नहि शूद्रोऽयं त्वत्कृते रघुनन्दन।।8।।**

**यस्मिन् मुहूर्ते काकुत्स्थ शूद्रोऽयं विनिपातितः।**
**तस्मिन् मुहूर्ते बालोऽसौ जीवेन समयुज्यत।।15।।**
**सोऽभिवाद्य महात्मानं ज्वलन्तमिव तेजसा।**
**आतिथ्यं परमं प्राप्त निषसाद नराधिपः।।24।।**
**तमुवाच महातेजाः कुम्भयोनिर्महातपाः।**
**स्वागतं ते नरश्रेष्ठ दिष्ट्या प्राप्तोऽसि राघव।।25।।**
**त्वं मे बहुमतो राम गुणौर्बहुभिरुत्तमैः।**
**अतिथिः पूजनीयश्च मम राजन् हृदि स्थितः।।26।।**
**सुरा हि कथयन्ति त्वागागतं शूद्रघातिनम्।**
**ब्राह्मणस्य तु धर्मेण त्वया जीवापितः सुतः।।27।।**

'ककुत्स्थकुलभूषण श्रीराम! मैं झूठ नहीं बोलता। देवलोक पर विजय पाने की इच्छा से ही तपस्या में लगा हूँ। आप मुझे शूद्र समझिये। मेरा नाम शंभूक है'।।3।। वह इस प्रकार कह ही रहा था कि श्रीरामचन्द्रजी ने म्यान से चमचमाती हुई तलवार खींच ली और उसी से उसका सिर काट लिया।।4।। वे सब देवता अत्यन्त प्रसन्न होकर सत्यपराक्रमी श्रीराम से बोले-'देव! महामते! आपने यह देवताओं का ही कार्य सम्पन्न किया है।।7।। 'शत्रुओं का दमन करने वाले रघुकुलनन्दन सौम्य श्रीराम! आपके इस सत्कर्म ही से यह शूद्र सशरीर स्वर्गलोक में नहीं जा सका है। अतः आप जो वर चाहें माँग लें'।।8।। 'काकुत्स्थ! आपने जिस मुहूर्त में इस शूद्र को धराशायी किया है, उसी मुहूर्त में वह बालक जी उठा है।।15।। अपने तेज से प्रज्वलित-से होने वाले महात्मा अगस्त्य का अभिवादन करके उनसे उत्तम आतिथ्य पाकर नरेश्वर श्रीराम आसन पर बैठे।।24।। उस समय महातेजस्वी महातपस्वी कुम्भज मुनि ने कहा-'नरश्रेष्ठ रघुनन्दन! आपका स्वागत है। आप यहाँ पधारे, यह मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है।।25।। 'देवता लोग कहते हैं कि 'आप अधर्म-परायण शूद्र का वध करके आ रहे हैं तथा धर्म के बल से आपने ब्राह्मण के उस मरे हुए पुत्र को जीवित कर दिया है'।।27।।

राम के राज्य में ब्राह्मणों की संख्या काफी अधिक रही होगी जिनमें बालक व जवान भी रहे होंगे। यदि शूद्र ऋषि शंभूक द्वारा तपस्या करने से ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु हुई है तो फिर केवल एक ही बालक क्यों मृत्यु को प्राप्त हुआ? क्योंकर जितने भी ओर

बालक व जवान ब्राह्मण थे उन सभी की मृत्यु नहीं हो पाई? शूद्र के स्वर्ग जाने हेतु तपस्या करने मात्र से ही ब्राह्मण मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो राम राज्य की ब्राह्मण जनसंख्या शून्य हो जानी चाहिए थी? इससे ऐसा लगता है कि शूद्र ऋषि शंभूक ने तपस्या जैसा ब्राह्मण का कर्म अपना लियाथा। चालाक वृद्ध ब्राह्मण ने यह उसके अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण समझा इसलिए अपने अबोध बालक को मृत दिखाकर शूद्र ऋषि शंभूक को दण्डित करने के लिए ही यह षडयंत्र रचा गया प्रतीत होता है। शूद्र ऋषि शंभूक की राम द्वारा हत्या कर दिए जाने के बाद देव ब्राह्मणों ने राम की प्रशंसा की थी। अगस्त्य ऋषि ने इनाम भी दिया था इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि उस क्षेत्र का पूरा ब्राह्मण वर्ग इस षडयंत्र में शामिल था।

नारद के यह आशंका जताने पर कि शायद कोई शूद्र तपस्या कर रहा है इस कारण ब्राह्मण के बालक की अकाल मृत्यु हुई है राम तुरन्त अस्त्र-शस्त्र लेकर पुष्पक विमान से पश्चिम में जहाँ-जहाँ शूद्रों की आबादी है वहाँ-वहाँ तलाशी ली होगी। फिर पश्चिम दिशा से उत्तर में हिमालय की तरफ गये वहाँ तलाश किया हिमालय के दुर्गम पहाड़ों व घने जंगलों में तपस्यारत शूद्र को तलाशने में राम को महीनों लग गये होंगे। वहाँ नहीं मिलने पर राम हजारों किलोमीटर की दूरी तय कर पूरब दिशा में गये वहाँ पर भी पहाड़ व भयंकर जंगल हैं। शूद्र ऋषि को तलाशनें महीनों लगे होंगे नहीं मिलने पर दक्षिण दिशा में गये जहाँ गोदावरी नदी के पास शूद्र ऋषि शंभूक राम को मिल पाया और तपस्या जैसे पवित्र काम करते हुए वह भी स्वर्ग प्राप्ति जैसे श्रेष्ट लक्ष्य के लिए तत्काल ही ऐसी पवित्र आत्मा वाले ऋषि को तलवार से काट कर मौत के घाट उतार दिया, क्या यह कार्य राम का ईश्वरीय कृत्य कहा जा सकता है? वास्तव में क्या बालक की लाश महीनों तक सुरक्षित रह पाई थी? शूद्र ऋषि शंभूक की हत्या करवाने के लिए ही ब्राह्मणों व ऋषियों ने यह साजिश रची थी क्योंकि शंभूक की हत्याके बाद बालक के जीवित हो जाने की घोषणा भी की गई थी। यदि राम वास्तव में ईश्वर अवतार थे तो जगह-जगह चारों दिशाओं में भटकने की कहाँ आवश्यकता थी? वे ईस्वरीय शक्ति से पता लगाकर बिना वहाँ पहुँचे भी मार सकते थे।

वास्तव में राम ब्राह्मणों व ऋषियों के अधीन व मार्गदर्शन में शासन करते थे। नारद ने उन्हें चेताया था कि ''जो कोई भी दुर्बुद्धि मानव जिस किसी भी राजा के राज्य अथवा नगर में अधर्म या न करने योग्य काम करता है उसका वह कार्य उस राज्य के अनैश्वर्य (दरिद्रता) का कारण बन जाता है। वह राजा शीघ्र ही नरक में पड़ता है। इसमें संशय नहीं वास्तव में राम को ब्राह्मण ऋषियों ने भयभीत कर दिया था कि यदि शूद्र ऋषि का वध नहीं

किया तो वे नरक के भागी होंगे। नरक में जाने के भय ने राम को शूद्र ऋषि शंभूक का वध करने को प्रेरित व मजबूर किया।

राम वर्ण-व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। उनकेराज्य में शूद्रों को विद्या पढ़ने, वेद सुनने, तपस्या करने का अधिकार नहीं था। शूद्र का काम केवल ब्राह्मणों की गुलामी करना था। ब्राह्मणों के हितों का ही वे ध्यान रखते थे। वे एक भीरू व्यक्ति थे, उनमें निष्पक्षता का अभाव था, वे न्यायप्रिय नहीं थे। उनका जीवन निष्कलंक नहीं कहा जा सकता।

# राम मनु के वंशज

**श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग-110**

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के सर्ग-5 के श्लोक 5 एवं 6 में आये विवरण के अनुसार मनु आर्यों के प्रथम राजा थे जिन्होंने सरयू नदी के किनारे अयोध्या को बसाया और फिर आगे श्लोक में आये विवरण के आनुसार उनके वंशज राजा दशरथ ने अयोध्या नगरी को विस्तृत आकार प्रदान किया और दशरथ के राम श्रेष्ठ पुत्र थे। वंशावली का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार हैं।

**विवस्वान् कश्यपाज्जज्ञे मनुर्वैवस्वतः स्वयम्।**
**स तु प्रजापतिः पूर्वमिक्ष्वाकुस्तु मनोः सुतः।।6।।**
**यस्येयं प्रथमं दत्ता समृद्धा मनुना मही।**
**तमिक्षवाकुमयोध्यायं राजानं विद्धि पूर्वकम्।।7।।**
**इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान् कुक्षिरित्येव विश्रुतः।**
**कुक्षेरथात्मजो वीरो विकुक्षिरुदपद्यत।।8।।**
**विकुक्षेस्तु महातेजाः बाणः पुत्रः प्रतापवान्।**
**बाणस्य च महाबाहुरनरण्यो महातपाः।।9।।**
**नानवृष्टिब्रभूवास्मिन् न दुर्भिक्षः सतां वरे।**
**अनरण्ये महाराजे तस्करो वापि कश्चन।।10।।**
**अनपरण्यान्महाराज पृथू राजा बभूव ह।**
**तस्मात् पृथोर्महातेजास्त्रिशङ्कुरुदपद्यत।।11।।**

स सत्यवचनाद् वीरः सशरीरो दिवं गतः।
त्रिशङ्कोरभवत् सूनुर्धुन्धुमारो महायसाः।।12।।
धुन्धुमारान्महातेजा युवाश्वो व्यजायत।
युवनाश्वसुतः श्रीमान् मान्धाता समपद्यत।।13।।
मान्धातुस्तु महातेजाः सुसंधिरुदपद्यत।
सुसंधेरपि पुत्रौ द्वौ ध्रुवसंधिः प्रसेनजित्।।14।।
यशस्वी ध्रुवसंधेस्तु भरतो रिपुसूदनः।
भरतात् तु महाबाहोरसितो नाम जायत।।15।।
द्वे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ बभूवतुरिति श्रुतिः।
तत्र चैका महाभागा भार्गवं देववर्चसम्।।18।।
ववन्दे पद्मपत्राक्षी कांक्षिणी पुत्रमुत्तमम्।
एका गर्भविनाशाय सपत्न्यै गरलं ददौ।।19।।
सपत्न्या तु गरस्तस्यै दत्तो गर्भजिघांसया।
गरेण सह तेनैव तस्मात् स सगरोऽभवत्।।24।।
स राजा सगरो नाम यः समुद्रमखानयत्।
इष्ट्वा पर्वणि वेगेन त्रासयान इमाः प्रजाः।।25।।
असमञ्जस्तु पुत्रोऽभूत् सगरस्येति नः श्रुतम्।
जीवन्नेव स पित्रा तु निरस्तः पापकर्मकृत्।।26।।
अंशुमानपि पुत्रोऽभूदसमञ्जस्य वीर्यवान्।
दिलीपोऽशुमतः पुत्रो दिलीपस्य भगीरथः।।27।।
भगीरथात् ककुत्स्थश्च काकुत्स्था येन तु स्मृताः।
ककुत्स्थस्य तु पुत्रोऽभूद् रघुर्येन तु राघवाः।।28।।
रघोस्तु पुत्रस्तेजस्वी प्रवृद्धः पुरुषादकः।
कल्माषपादः सौदास इत्येवं प्रथितो भुवि।।29।।

**कल्माषपादपुत्रोऽभूच्छङ्खणस्त्विति नः श्रुतम्।**
**यस्तु तद्वीर्यमासाद्य सहसैन्यो व्यनीनशत्।।30।।**
**शङ्खणस्य तु पुत्रोऽभूच्छूरः श्रीमान् सुदर्शनः।**
**सुदर्शनस्याग्निवर्ण अग्निवर्णस्य शीघ्रगः।।31।।**
**शईघ्रगस्य मरुः पुत्रो मतोः पुत्रः प्रशुश्रुवः।**
**प्रशुश्रुवस्य पुत्रोऽभूदम्बरीषो महामतिः।।32।।**
**अम्बरीषस्य पुत्रोऽभून्नहुषः सत्यविक्रमः।**
**नहुषस्य च नाभागः पुत्रः परमधार्मिकः।।33।।**
**अजश्च सुव्रतश्चैव नाभागस्य सुतावुभौ।**
**अजस्य चैव धर्मात्मा राजा दशरथः सुतः।।34।।**
**तस्य ज्येष्ठोऽसि दायादो राम इत्यभिविश्रुतः।**
**तद् गृहाण स्वकं राज्यमवेक्षस्व जगन्नृप।।35।।**
**इक्ष्वाकूणां हि सर्वेषां राजा भवति पूर्वजः।**
**पूर्वजे नावरः पुत्रो ज्येष्ठो राजाभिषिच्यते।।36।।**

'कश्यप से विवस्वान् का जन्म हुआ। विवस्वान् के पुत्र साक्षात् वैवस्वत मनु हुए, जो पहले प्रजापति थे। मनु के पुत्र इक्ष्वाकु हुए।।6।। 'जिन्हें मनु ने सबसे पहले इस पृथ्वी का समृद्धिशाली राज्य सौंपा था, उन राजा इक्ष्वाकु को तुम अयोध्या का प्रथम राजा समझो।।7।। 'इक्ष्वाकु के पुत्र श्रीमान् कुक्षि के नाम से विख्यात हुए। कुक्षिक के वीर पुत्र विकुक्षि हुए।।9।। 'विकुक्षि के महातेजस्वी प्रतापी पुत्र बाण हुए। बाण के महाबाहु पुत्र अनरण्य हुए, जो बड़े भारी तपस्वी थे।।9।। 'सत्पुरुषों में श्रेष्ठ महाराज अनरण्य के राज्य में कभी अनावृष्टि नहीं हुई, अकाल नहीं पड़ा और कोई चोर भी नहीं उत्पन्न हुआ।।10।। 'महाराज! अनरण्य से राजा पृथु हुए। उन पृथु से महातेजस्वी त्रिशंकु की उत्पत्ति हुई।।11।। 'वे वीर त्रिशंकु विश्वामित्र के सत्य वचन के प्रभाव से सदेह स्वर्गलोक को चले गये थे। त्रिशंकु के महायशस्वी धुन्धुमार हुए।।12।। 'धुन्धुमार से महातेजस्वी युवनाश्व का जन्म हुआ। युवनाश्व के पुत्र श्रीमान् मान्धाता हुए।।13।। 'मान्धाता के महान् तेजस्वी पुत्र सुसंधि हुए। सुसंधि के दो पुत्र हुए-ध्रुवसंधि और प्रसेनजित्।।14।। 'ध्रुवसंधि के यशस्वी पुत्र शत्रुसूदन भरत थे। महाबाहु भरत से असित नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।।15।। 'सुना जाता है

कि असित की दो पत्नियाँ गर्भवती थीं। उनमें से एक महाभागा कमललोचना राजपत्नी ने उत्तम पुत्र पाने की अभिलाषा रखकर देवतुल्य तेजस्वी भृगुवंशी च्यवन मुनि के चरणों में वंदना की और दूसरी रानी ने अपनी सौत के गर्भ का विनाश करने के लिये उसे जहर दे दिया।।18-19।। 'सौत ने उसके गर्भ को नष्ट करने के लिये जो गर (विष) दिया था, उस गर के साथ ही बालक प्रकट हुआ, इसलिये सगर नाम से प्रसिद्ध हुआ।।24।। 'राजा सगर वे ही हैं, जिन्होंने पर्व के दिन यज्ञ की दीक्षा ग्रहण करके खुदाई के वेग से इन समस्त प्रजाओं को भयभीत करते हुए अपने पुत्रों से समुद्र को खुदवाया था।।25।। 'हमारे सुनने में आया है कि सगर के पुत्र असमञ्ज हुए, जिन्हें पापकर्म में प्रवृत्त होने के कारण पिता ने जीते-जी ही राज्य से निकाल दिया था।।26।। 'असमञ्ज के पुत्र अंशुमान् हुए, जो बड़े पराक्रमी थे। अंशुमान् के दिलीप और दिलीप के पुत्र भागीरथ हुए।।27।। 'भगरीथ से कुकत्स्थ का जन्म हुआ, जिनसे उनके वंशवाले 'काकुत्स्थ' कहलाते हैं। ककुत्स्थ के पुत्र रघु हुए, जिनसे उस वंश के लोग 'राघव' कहलाये।।28।। 'रघु के तेजस्वी पुत्र कल्माषपाद हुए, जो बड़े होने पर शापवश कुछ वर्षों के लिये नरभक्षी राक्षस हो गये थे। वे इस पृथ्वी पर सौदास नाम से विख्यात थे। 'कल्माषपाद के पुत्र शङ्खण हुए, यह हमारे सुनने में आया है, जो युद्ध में सुप्रसिद्ध पराक्रम प्राप्त करके भी सेना सहित नष्ट हो गये।।30।। 'शङ्खण के शूरवीर पुत्र श्रीमान् सुदर्शन हुए। सुदर्श' के पुत्र अग्निवर्ण और अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग थे। 'शीघ्रग के पुत्र मरु, मरु के पुत्र प्रशुश्रुव तथा प्रशुश्रुव के महाबुद्धिमान् पुत्र अम्बरीष हुए।।32।। 'अम्बरीष के पुत्र सत्यपराक्रमी नहुष थे। नहुष के पुत्र नाभाग हुए, जो बड़े धर्मात्मा थे।।33।। 'नाभाग के दो पुत्र हुए-अज और सुव्रत। अज के धर्मात्मा पुत्र राजा दशरथ थे।।34।। 'दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र तुम हो, जिसकी 'श्रीराम' के नाम से प्रसिद्धि है। नरेश्वर! यह अयोध्या का राज्य तुम्हारा है, इसे ग्रहण करो और इसकी देखभाल करते रहो।।35।। 'समस्त इक्ष्वाकुवंशियों के यहाँ ज्येष्ठ पुत्र ही राजा होता है। ज्येष्ठ के होते हुए छोटा पुत्र राजा नहीं होता है। ज्येष्ठ पुत्र का ही राजा के पद पर अभिषेक होता है।।36।।

वास्तव में राम के पूर्वज मनु थे और राम ने अपने जीवनकाल में वही नीति अपनाई जो मनु ने अपनाई थी। रामराज्य ब्राह्मण राज्य था। जैसा कि राजचरित मानस में राम ने कहा है -

**1. विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।**

**निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।। (बालकाण्ड 192 (2))**

**अनुवाद -** ''राम ने ब्राह्मण, गाय, देव व संत के लिए ही मनुष्य के रूप में जन्म लिया है।'' इसका तात्पर्य है कि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं महिलाएं उनके अनुसार फालतु के प्राणी हैं।

2. **तप बल विप्र सदा बरि आरा। तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा।।**

**(बालकाण्ड 164 (2))**

**अनुवाद –** ब्राह्मण की तपस्या शक्ति दुश्मन को नष्ट कर देती है। ब्राह्मण के नाराज हो जाने पर उसकी रक्षा संसार में कोई नहीं कर सकता।

3. **इन्द्र कुलिस मम सूल बिसाला। काल दण्ड हरि चक्र कराला।।**

**जो इन्ह कर मारा नहीं मरई। बिप्र दोह पावक सो जरई।।**

**(उत्तरकाण्ड 108 (घ) 13–14)**

**अनुवाद –** ''इन्द्र के कोप, कांटे, ईश्वरीय दण्ड से भी जो नष्ट नहीं हो पाता, वह ब्राह्मण से दुश्मनी करने पर जलकर भष्म हो जाता है।''

4. **द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जनमई बायस शरीर धरि।।**

**(उत्तरकाण्ड 120 (ख))**

**अनुवाद –** ''ब्राह्मण की निंदा करने वाला घोर नरक में जाता है और उसे कई अधम योनियों में जन्म लेना पड़ता है।'

5. **ते नर प्रान समान मम, जिन्ह के द्विज पद प्रेम।** **(सुन्दरकाण्ड 48)**

**अनुवाद –** जो व्यक्ति ब्राह्मण से स्नेह रखता है वह मुझे प्राण से भी अधिक प्रिय है।''

6. **पुन्य एक जग महुं नहिं दूजा। मन क्रम वचन विप्रपद पूजा।।**

**सानुकूल तेहि पर मुनि देवा। जो तजि कपुट करई द्विज सेवा।।**

**(उत्तरकाण्ड 44.4)**

**अनुवाद –** मन, वचन एवं कर्म से ब्राह्मण की पूजा के अलावा विश्व में और कोई दूसरा पुण्य काम नहीं है। देवता व ऋषि भी सब काम छोड़कर ब्राह्मण की पूजा को ही श्रेष्ठ मानते हैं।

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण एवं रामचरितमानस के बालकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, उत्तरकाण्ड में उल्लिखित उपरोक्त श्लोकों से ऐसा लगता है कि राम ने केवल ब्राह्मण, गाय, सुर, एवं संतों के लिए ही पृथ्वी लोक में आने का कष्ट उठाया है। राम की अन्य वर्णों के लोगों पर कतई कृपादृष्टि नहीं है। राम जिनको ब्राह्मणों ने ईश्वर कहा है उन्होंने एक ही स्वर में आम जनता को यह उपदेश भी दे दिया कि जिन पर ब्राह्मण की कृपा नहीं होती है तथा जिससे ब्राह्मण नाराज हो जाता है, उसकी कोई रक्षा नहीं कर सकता। जिनको इन्द्र अथवा अन्य

शक्तियाँ नहीं मार सकती उनको ब्राह्मण की नाराजगी भस्म कर सकती है। ब्राह्मण की निन्दा करने वाले प्राणी को कई योनियों में भटकना पड़ता है। यदि राम का यही उपदेश है तो फिर लोगों को राम की भक्ति करने की कहाँ आवश्यकता है? केवल ब्राह्मण को खुश रखो, क्योंकि ब्राह्मण की नाराजगी मौत का भी कारण बन सकती है और ब्राह्मण का गुणी अथवा ज्ञानी होना भी आवश्यक नहीं है। जैसा कि राम ने अरण्यकाण्ड के श्लोक-33-1 में कहा है -

**सापत ताड़त पुरुष कहंता। विप्र पूज्य असी गावहिं संता।।**

**पूजिअ विप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना।।**

**(अरण्यकाण्ड 33.1)**

**अनुवाद –** ''संत लोग मानवमात्र को उपदेश देते हैं कि गुण व ज्ञान दोनों से रहित होते हुए भी ब्राह्मण पूजने योग्य है। यदि शूद्र बुद्धिमान व गुणवान है, तब भी पूजने योग्य नहीं है।''

ब्राह्मण यदि ज्ञान एवं गुण दोनों से रहित हो अर्थात् ब्राह्मण, मूर्ख, ढीठ, व्याभिचारी, लोभी, चोर, डाकू, उच्चका व अज्ञानी भी हो तो भी पूजने योग्य है लेकिन यदि शुद्र गुणी हो, बुद्धिमान हो, सज्जन हो, तपस्वी व त्यागी हो, सदाचारी हो, तब भी पूजने योग्य नहीं है। बाकी क्षत्रिय, वैश्य भी राम के अनुसार बेमतलब के फालतू आदमी हैं जो अकारण ही इस पृथ्वी का भार बढ़ा रहे हैं, क्योंकि ब्राह्मण व शूद्र के मान-अपमान का ही राम ने ख्याल रखा है। राम ने अपने राज्य में शूद्रों (अनुसूचित जाति/जनजाति व पिछड़ा वर्ग के लोगों) एवं स्त्रियों को शिक्षा व आराधना के अधिकार से वंचित कर वर्ण व्यवस्था को कठोरता से लागू किया इसलिए ही ब्राह्मणों ने राम को ईश्वर बना दिया। स्वतंत्रता के बाद राम के कहीं मन्दिर नहीं बने, गणपति, शिव, कृष्ण, हनुमान एवं दुर्गा के ही नये मन्दिर बने हैं। राम को ब्राह्मणों ने समाज पर थोपने का सदैव प्रयास किया और अपनी जन्म आधारित श्रेष्टता व बपौती को बनाये रखने के लिए राम को राष्ट्रीयता व राष्ट्रीय अस्मिता का चौला पहनाकर महिमा मंडन में लग गये हैं। **आर्यों के प्रथम राजा मनु का वंशज होने के नाते राम ने अपने पूर्वज मनु द्वारा स्थापित वर्ण आधारित समाज व्यवस्था को कठोरता से लागू किया जो वर्तमान संदर्भ में स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय पर आधारित समाज व्यवस्था की स्थापना के मार्ग में गंभीर खतरा है और लोकतंत्र के लिए भी घातक है। राम राज्य वास्तव में ब्राह्मण राज्य था।**

---

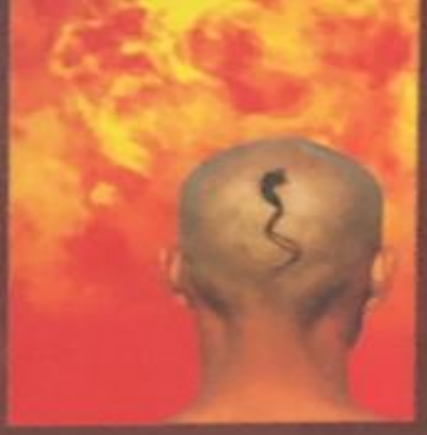

**आर. के. आंकोदिया** (1940) ने एम.ए., एल.एल.बी. की शिक्षा प्राप्त कर वकालत के व्यवसाय से सन् 1972 में बतौर राजस्थान मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट के पद से अपना कैरियर शुरू किया।

आप जिला एवं सेशन न्यायाधीश 2000 तक रहे व उसके बाद सदस्य, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के पद पर 2000 से 2005 तक रहे। इसी बीच आप महासचिव, राजस्थान उच्चतर सेवा संघ वर्ष 1989-90, सदस्य सचिव, राजस्थान विधिक सेवा प्राधिकरण, (1996-99) भी रहे।

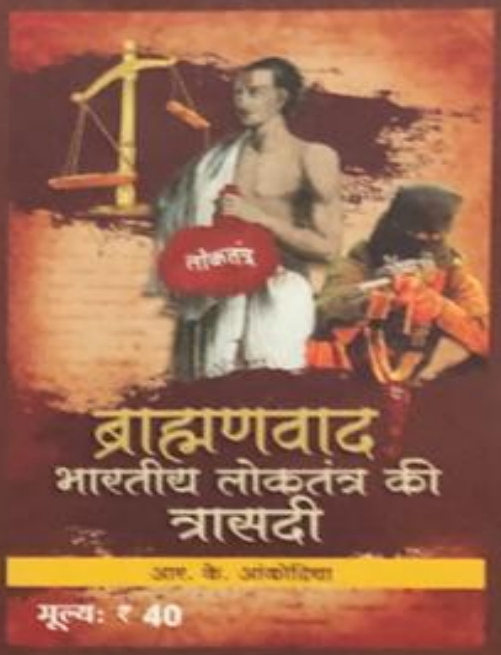


## लेखक की अन्य रचनाएँ:

मूल्य: ₹ 125

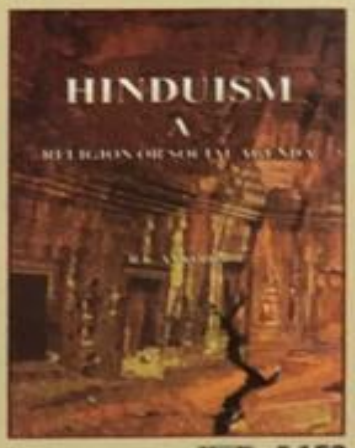


मूल्य: ₹ 150

मूल्य: ₹ 150

**आंकोदिया पब्लिकेशन्स**
7, हनुमान नगर विस्तार, विष्णु मार्ग, सिरसी रोड,
जयपुर (राज.)
फोन : 0141-2366869

**मूल्य: ₹ 50**